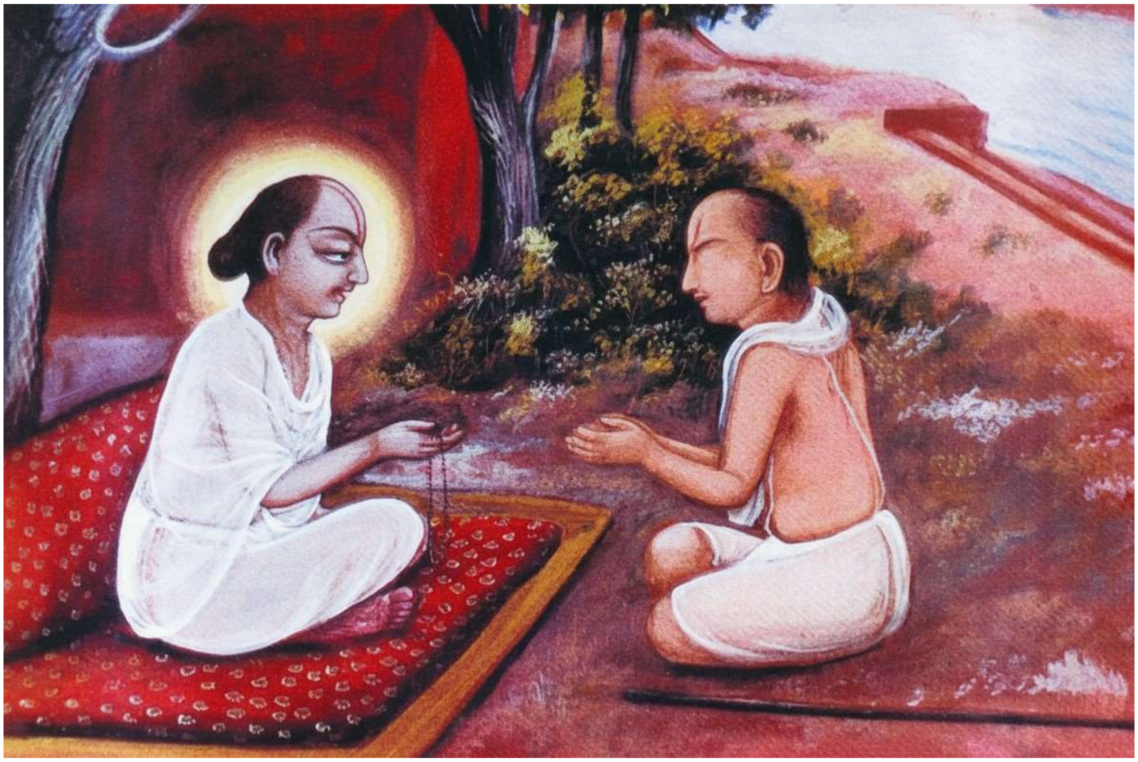
सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टि दर्शन १



श्रीवल्लभाचार्यजी – सखा सूरदासजी

VIBRANT PUSHTI

“ जय श्री कृष्ण “

कितनी प्रकार की जातियां

कितनी प्रकार की मान्यता

कितनी प्रकार की वैचारिकता

कितनी प्रकार की कार्यदक्षता

कितनी प्रकार की स्वीकृतियां

कितनी प्रकार की शैलियां

कितनी प्रकार की विविधता

कितनी प्रकार की भिन्नता

कितनी प्रकार की अपनायीता

कितनी प्रकार की ज्ञानता

कितनी प्रकार की अज्ञानता

कितनी प्रकार की मार्गदर्शनता

कितनी प्रकार की वैविध्यता

कितनी प्रकार की अनित्यता

कितनी प्रकार की नितीयां

कितनी प्रकार की निधियां

कितनी प्रकार की व्याख्या

कितनी प्रकार की अर्थता

कितनी प्रकार की आद्रता

कितनी प्रकार की विश्वनीयता

कितनी प्रकार की कहानियां

कितनी प्रकार की सार्थकता

कितनी प्रकार की यथार्थता

कितनी प्रकार की सफलता

कितनी प्रकार की शिक्षता

कितनी प्रकार की साक्षरता

कितनी प्रकार की दर्शता

कितनी प्रकार की मानवता

कितनी प्रकार की दक्षता

कितनी प्रकार की धर्मता

ओहह! ऐसे कितनी प्रकार की नियंता

बस जब तक सांस है तब तक सहराना

बस जब तक जीवन है तब तक निभाना

चल बसना नही ठहरना

यूं ही सब छोड के कहीं

प्रकार प्रकार प्रकार की जाल

बिखर जाना कहीं ओर कहीं ओर

है ऐसे कहीं संस्कार

है ऐसे कहीं सिद्धांत

है ऐसे कहीं निश्चय

है ऐसे कहीं मार्ग

जिससे न उठे प्रकार

केवल जागे एकाकार

जागे एक रणकार

जागे एक अवतार

जो जीवन आनंद भरे

जो जीवन विश्वास भरे

जो जीवन धर्म धरे

जो जीवन यथार्थ करे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा तेरी तरस है

कान्हा तेरी तडप है

जहां जहां देखुं लीला तेरी

जहां जहां निहालु मुखडा तोरी

कैसे मिटाऊं प्यास मोरी

तु ही नदियां

तु ही सागर

तु ही बादल

तु ही बरसात

कैसे स्पर्शु प्रेम धारा तोरी

तु ही अग्नि

तु ही सूरज

तु ही चंद्र

तु ही विरहाग्नि

कैसे छूऐ प्रेम ज्योत तोरी

तरस तरस से जनम जनम तरसी

तडप तडप से जीवन जीवन तडपी

एक ही मार्ग जो तुने जगाई

तु ही स्पर्श ले यह आत्म तोरी

तु ही बस ले यह मन प्रीत धारी

तु ही रंग दे यह काया संग तोरी

मिट जाये हर प्यास मोरी

हे कान्हा! 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नूतन वर्ष

नूतन सूरज

नूतन प्रकृति

नूतन दिन

नूतन आगमन

नूतन उर्जा

नूतन संचार

नूतन संकेत

नूतन सांसें

नूतन तत्व

नूतन संकल्प

नूतन आश

नूतन जीवन

नूतन रक्षण

नूतन शैली

नूतन धर्म

नूतन कर्म

नूतन पुरुषार्थ

नूतन प्रेम

नूतन तनुनवत्व

नूतन एकात्म

नूतन परमात्मा

हे प्रभु! हमें सदा नूतन प्रदान हो ऐसी प्रार्थना🌷🙏🌷

हिंदु नूतन वर्ष का अभिनंदन 🌷🙏🌷👍

हिंदु नूतन वर्ष की आरोग्य सुखाकरं अभ्यर्थना 🌷🙏🌷

हिंदु नूतन वर्ष की शुभकामनाएं🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चैत्र नवरात्रि "

हम समझते है माताजी की आराधना पूजा और हवन अध्ययन करना है, गहराई से और वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से समझा जाय तो यह दिन और रात्री हर जीव के लिए अति औषधि युक्त और आध्यात्मिक शिक्षात्मक और शुद्ध धर्म रक्षक है।

सूर्य को उगते ही हमें अलग सा अनुभव होता है - अर्थात सूर्य के किरणों से स्पर्शती उर्जा हमें नवपल्लवती करती है।

दिन के हर प्रहर हमें आध्यात्मिक प्रवृत्ति की ओर आकर्षता है - नयन, मन, तन और काल का चक्र हमें एकांत, योग्य विचार धारा में खिंचते है।

जहां भी नजर पहुंचे सकारात्मकता ही उठती है

मन जहां जहां पहुंचे नकारात्मकता के लिए घिन्नता अनुभवता है

तन सेवा पूजा यज्ञ के पुरुषार्थ के लिए लालायित होता है

काल अपनी गति में समांतरता भरता हुआ हर जीव का हित जगाता है

रात्रि - निरवता, निर्विघ्नता और हर प्रहर में शांतता, मौनता, पवित्रता और एकाग्रता से ब्रह्म मुहूर्त तक हर जीव को आनंदमय करने टहलती रहती है।

कितनी मधुर है यह नवरात्रि 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आपने हमें कहा
आपने मुझे कहा

संभल जाओ
सुधर जाओ
जाग जाओ
समझ पाओ

हमने आपको कहा
मैंने आपको कहा

संभलो
सुधरो
जागो
समझो
अपनाओ

हर हर एक को कहे और कहते रहे
समय अनुसार
परिस्थिति अनुसार
कार्य शैली अनुसार
विचार धारा अनुसार
स्वभाव अनुसार
फल अनुसार
प्रमाण अनुसार
संरक्षण अनुसार
समन्वय अनुसार
संबंध अनुसार

कहते कहते काल गुजर गए
संभलते संभलते शतक बित गए
सुधरते सुधरते युग बित गए
जागते जागते काल बह गए
समझते समझते जीवन जी गए

सच! हम कहां है?
सच! हम कैसे है?
सच! हम क्या है?
सच! हम कौन है?

जनम जनम जीवन जीवन लोक लोक
मनुष्य जन्म जीवन से ही मैं अपने आप को
संभल सकता हूं
सुधर सकता हूं
जाग सकता हूं
समझ सकता हूं
अपना सकता हूं
पा सकता हूं

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं चल रहा था

निश्चित मार्ग निश्चित राह और निश्चित मंजिल की ओर

एक डग भरा

माता पिता ने कहा - यह मार्ग - यह राह तुम्हें कठिन होगा

भाई बहन ने कहा - अरे यह मार्ग से ही हम लौट आए - तुम्हें झझुमना पडेगा

दोस्तो ने कहा - अरे मित्र! कैसा रास्ता चुना? ऐसे रास्ते पर कोई चल सकता है! जो तुम चलने तैयार हो गए!

समाज ने कहा - हमने कहींओ को समझा समझा कर ऐसे रास्ते से वापस लौटाए है - किसीके बस की बात नही है - जो ऐसे रास्ते पकडे।

पूरा मानव समुदाय में ऐसी ही रीत - ऐसी ही मान्यता - ऐसी ही जीवन पद्धति।

हम ऐसे - हम भी ऐसे - हमारे सी भी ऐसे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

अब कैसे चलू?

न रहा निश्चित मार्ग - राह और मंजिल

भटकता रहा भटकता हूं भटकता रहूँगा

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

ऐसा जीने से अच्छा है

मैं अडग और अचल सैद्धांतिक मार्ग अपनाऊं - जिससे मैं निश्चित - मेरा जीवन निश्चित - मेरा पुरुषार्थ निश्चित 🙏🌷🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भूलना "

" भूल जाना "

क्या भूले?

नही नही कभी न भूल सकते

भूलना - भूल जाना

याद करते जाये करते जाये करते जाये

गहराई में डूबते जाये डूबते जाये डूबते जाये

क्या जानते है हम भूलना

क्या समझते है भूल जाना

नही नही कोई भी जीव नही भूलता नही भूलता नही भूलता

जो भूले समझे

जो भूले जाने

वह धर्म नही धरते

वह कर्म नही करते

वह पुरुषार्थ नही डगते

वह करुणा नही अर्पते

वह प्रेम नही पाते

वह धूर्त है

वह कपटी है

वह दुष्ट है

वह भ्रष्ट है

वह निर्लज्ज है

आत्मीय जीव नही भूल सकता

तत्वीय जीव नही भूल पाता

वैज्ञानिक सिद्धांत है

आध्यात्मिक सिद्धांत है

आत्मीय सिद्धांत है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सुखी कौन?

जो आकाश से जुडे

सुखी कौन?

जो धरती से जुडे

सुखी कौन?

जो सागर से जुडे

सुखी कौन?

जो वायु से जुडे

सुखी कौन?

जो सूर्य से जुडे

सुखी कौन?

जो चंद्र से जुडे

सुखी कौन?

जो नदी से जुडे

सुखी कौन?

जो वनस्पति से जुडे

सुखी कौन?

जो पर्वत से जुडे

सुखी कौन?

जो प्रकृति से जूडे

सुखी कौन?

जो संस्कृति से जुडे

सुखी कौन?

जो रंग से जुडे

सुखी कौन?

जो धर्म से जुडे

सुखी कौन?

जो वर्ण से जुडे

सुखी कौन?

जो ज्ञान से जुडे

सुखी कौन?

जो भक्ति से जुडे

सुखी कौन?

जो संस्कार से जुडे

सुखी कौन?

जो सिद्धांत से जुडे

सुखी कौन?

जो दासत्व से जुडे

सुखी कौन?

जो प्रेमत्व से जुडे

सुखी कौन?

जो आत्म से जुडे

सुखी कौन?

जो स्व से जुडे

गहराई से सोचते हुए एक सूची बनाये

मैं खुद किससे जुडा हूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण" 🌷🙏🌷

दिन रैनमिलते है

रैन दिन मिलते है

नदी सागर मिलते है

भंवरा फूल मिलते है

सूर संगीत मिलते है

स्वर राग मिलते है

सांस धडकन मिलते है

आत्म आत्म मिलते है

प्रेम प्रकट होता है

प्रेम प्रेम मिलते है

परमानंद दिल एकात्मता है

दिन रुक जाता है

रैन थम जाती है

नदी ठहर जाती है

सागर थंभ जाता है

भंवरा निस्थभ्ता है

फूल अवृद्धता है

सूर शांतता है

संगीत अचलता है

स्वर थमती है

राग स्थिरता है

सांस थंभती है

धडकन ठहरती है

आत्म विस्फुलिंगती है

प्रेम उदभवता है

परमानंद प्रकटता है

प्रियतम प्रिये की अलौकिक पराकाष्ठा 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे!
ऑय!
हः!
🎵!
मधुर सी गूंज
मधुर सी रणकार
मधुर सी कहूंक
मधुर सी टहूंक
मधुर सी नजर
मधुर सी महक
मधुर सी चुभन
मधुर सी लहर
मधुर सी तरंग
मधुर सी सांस
मधुर सी प्यास
मधुर सी आश
मधुर सी याद
मधुर सी मुस्कान
मधुर सी पुकार
मधुर सी भेंट
मधुर सा सूर
मधुर सा स्पर्श
मधुर सा स्वर
मघुर सा रंग
मधुर सा इशारा
मधुर सा बिखरना
मधुर सा लहराना
मधुर सा आभास
मधुर सा टकराव
मधुर सा दर्द
मधुर सा चुभन
मधुर सा एहसास
मधुर सा एकरार
एक सूक्ष्म सी - नन्ही सी - छोटी सी गूँज - सूर - रणकार हमें क्या कर देती है!
आत्म का आहवान
रुह की पुकार
धडकन की थनथनाट
अधर की थरथराहट
नयन की तीव्रता
नयन की व्याकुलता
मन की विरहता
सांस की अगनता
तन की तडपता

हममें क्या कर देती है
जो हम तरसते - भटकते - थडकते - धडकते दौडते रहते है
गोपि🌷
ओहह कान्हा!
ओ श्याम!
हे गोविंद!
हे गोपाल!
ऑय राधा!
ह: प्रिये!
🎵🎶🎼🎵🎶 छेडे बंसी की धून
अतूट परिवर्तन
अखंड तरसना
अचल ठहरना
आमूल तडपना
रुहानी गूँज - आत्मीय गूँज
मधुर मधुर मधुर मधुर
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🎶🌷

" यमुना मैया "
यमुना मैया यमुना मैया यमुना मैया
है ऐसी धात्री मेरी
नित नित तनु नवत्व जगाय
है ऐसी यात्री मेरी
घडी धडी स्फूर रेणु उत्कटाय
है ऐसी गौत्री मेरी
स्मरपित पुष्टि जन्म उज्जवलाय
है ऐसी मात्री मेरी
परब्रह्म पुरुषोत्तम पहुंचाय
है ऐसी जात्री मेरी
कुल कुल सर्वोत्तम सोहाय
है ऐसी आर्ति मेरी
सेव्य यथार्थे कृष्ण प्रियाय:
है ऐसी जयति मेरी
अनंतगुणसंश्रिते मम मन सुरक्षिते
है ऐसी प्रकृति मेरी
प्रियो भवति गोपिका सदाय:
है ऐसी विभ्रती मेरी
क्षण क्षण जनम पुष्टिस्थितै:
है ऐसी शास्त्री मेरी
सकल सिद्धि सदा निज मम:
है ऐसी चारित्री मेरी
न जातु यमयातना पावत पुष्टि पय:
है ऐसी स्तुति मेरी
मुदा भवति हरेर्यदनुसेवया
है ऐसी सन्तुष्यति मेरी
स्वभाव भवद्वदति वल्लभ: श्रीहरे:
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
अदभुत अलौकिक अविस्मर्णीय अद्वैत
हे मेरी यमुना मैया
सदा शरण तुम्हारी
सदा चरण बुहारी
सदा करण सुधारी
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह स्वरूप क्यूँ नही जान पाते है?

यह मनुष्य जन्म जीवन ही स्वरूप का पहचान करवा सकता है

हम मनुष्य हो कर भी हम स्व स्वरुप - परम स्वरूप नही जान पाते है - क्यूँ?

क्यूंकि हम अपने आप को जानना नही चाहते

हम स्वभाव से ही

हम तन मात्राओं से ही

हम प्रकृति

हम तत्व

हम कर्म

हम पुरुषार्थ

हम अपने देह को ही जानना नही चाहते

हम अपने पंच महाभूत तत्वों को नही जानते है

तो हममें और हमारी आसपास की ओरा को नही जानते है

प्राथमिक यही शिक्षा ही हमें जानने की आवश्यकता है

जो हमें जीते जीते सांस से - द्रष्टि से - कार्य से - स्पर्श से - अनुभव से - प्रकृति से - पुरुषार्थ से और आत्मीयता से ही जान सकते है।

इसके लिए

न तो वैज्ञानिक होना है

न तो चिकित्सक होना है

न तो स्नातक होना है

न तो शास्त्री होना है

न तो वैरागी होना है

न तो अनुयायी होना है

भक्त होना है

भक्त ही स्वरूप जान सकता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

स्व अहंकार में हम स्व को तो मारते है पर साथ साथ साथीओं और अनेकों को मारते है।
यही ही अहंकार से कुटुंब बरबाद - समाज बरबाद - वर्तमान बरबाद - भविष्य बरबाद।
किस किसको क्या कहे?
जो खुद की नही सुनते वह औरों को भी क्या समझे
मेरे दोस्त! हर कोई ऐसी रीति नीति में जीते है तो कौन किसे तारेगा
कहते रहते है - नसीब से आया - नसीब से भुगते - नही तो और कोई भुगतेगा
अररर - न तो नसीब है - न भाग्य है
यह तो कर्म की ऐसी निधि है जो अच्छा भुगते उन्हें जगाने - देखा ऐसे कर्म से ऐसा पाते है
जो गलत स्वीकारा चाहे औरों की नजरों में अति सुखी
पर वही तन मन से अति दु:खी
कर्म सिद्धांत किसीको न छोडे
अपनी नजर से तवंगर है
प्रभु की नजर से क्या है? प्रभु जाने
जो घडी घडी का हिसाब करें
कैसे करुं औरों का हिसाब
जो खुद का हिसाब न समझ सकूं
हर गति, हर कृति, हर प्रकृति हिसाब से चले
चाहे अपेक्षा कोई ही करें
जो सिद्धांत से
जो शिस्तसा से
जो सत्यता से
जो कुशलता से
जो कृतज्ञता से
जो जीये
सदा करुणा पाय
सदा करुणा ध्याय
सदा करुणा बिखराय
सदा करुणा लुटाय
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृष्ण ने राधा से प्रेम किया

मीरा ने कृष्ण से प्रेम किया

गोपि ने कृष्ण से प्रेम किया

व्रज ने राधा से प्रेम किया

कृष्ण ने व्रज से प्रेम किया

यमुना ने कृष्ण से प्रेम किया

अष्टसखा ने कृष्ण से प्रेम किया

सखियों ने राधा से प्रेम किया

कृष्ण ने गैयाँ से प्रेम किया

भक्तों ने कृष्ण से प्रेम किया

प्रेम की लीला है न्यारी

प्रेम प्रेम से परमात्मा पहचानी

प्रेम प्रेम से प्रियतमा पा नी

राधाकृष्ण राधे राधे 🌷🙏🌷

राधेश्याम राधे राधे 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राम राम राम राम "

" राम राम "

" जय श्री राम "

" जय राम जी "

" हे राम! "

हमारी संस्कृति कितनी अनोखी और अभेद्य है की शब्द को आत्मीय रुप - आध्यात्मिक रुप और परम आग्नेय रुप से हमारी परम ज्योत आत्मा से एकरुप करके सदा उपासित करके मंत्र, ऋचा और श्रुति में परिवर्तन करके परमात्मा में विलीन करते है।🌷🙏🌷

राम
राम राम
हे राम!
मन से पुकारें
मुख से पुकारें
अधर से पुकारें
होठों से पुकारें
नैनों से पुकारें
मस्तक से पुकारें
सदा उर्जावान
सदा उर्मिल
सदा विशुद्ध
सदा मधुर
सदा सत्य
सदा पवित्र
सदा विश्वास
सदा संस्कार
सदा सकारात्मक
सदा आनंदित
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
हम भाग्यवान है - हमने यह संस्कृति में जन्म धरा

जो " राम " से जन्मता है

जो " राम " से जीवनता है

जो " राम " से मोक्षता है

" राम राम " " राम राम "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राम " 🌷🙏🌷

हमारी उत्पत्ति अर्थात हमारा गौत्र वैदिक धर्म कर्म पुरुषार्थ संस्कृति से है - तो.हममें न तो कोई रोग, भोग और प्रयोग आ सकते है, क्यूंकि हमारी वीर्यता ही ऐसे संस्कारों से सिंचाई है - विशेष प्रकार के योगो से शिक्षित है - हम न तो दु:खी, अशक्त, कायर और लाचार हो सकते है।
हम हिन्दु धर्म पारायणी है - जो मंत्र, संकल्प, उपवास का प्रबल अनुष्ठान करके कोई भी आध्यात्मिक औषधि स्व से ही बनाकर रोग प्रतिरोधक, दु:ख प्रतिनाशक, अशक्ति, कायरता, लाचारी, दूरित का क्षय अर्थात नष्ट कर सकते है।
कोई एक मंत्र का अजपोजाप - अतूट स्मरण
श्री कृष्ण शरणं मम:
स्व का नामकरण संस्कार - यह स्व नाम भी एक मंत्र है
हमारा कुल देव नाम जाप्यं
हमारा पूज्य आध्यात्मिक गुरु नाम
हमारा इष्ट देव नाम जाप्यं
हमारा आराध्य देव नाम जाप्यं
हमारा गौत्राचार्य प्रदोत्पिर्त धर्म मंत्र
या
राम
कृष्ण
शिव
हमें अवश्य संरक्षण प्रदान करेंगे
हमें अवश्य सुरक्षित रखेंगे
हमें अवश्य सलामत बनायेंगे
हममें अवश्य हिम्मत, शक्ति और आश किरण जगायेंगे
हम कहीं बार कहते रहते है
" भगवान रखें ऐसो रहते है "
यह भी अनोखा और सकुशल वर्धक मंत्र है
अगर हम यह सब न भूले - न बिसरे तो
' कॉरोना '
' मधुप्रमेह ' डायबिटीज
' चिंता ' ब्लड प्रेशर
' नाहक डर '
' मृत्यु भय '
दूर ही होगा - रहेगा - भागेगा - छूटेगा
हम सदा निर्भय - निरोगी - स्वस्थ - कुशल ही होंगे🌷🙏🌷
हम श्रद्धावान है
हम धैर्यवान है
हम धर्म परायण है
हम कर्मिष्ठ है
हम पुरुषार्थी है
जपीले ह्रदय स्मरण मंत्र पाये सुसंस्कृत जीवन
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वैसे तो हम समझदार है
वैसे तो हम माहितगार है
वैसे तो हम होशियार है
वैसे तो हम चालाक है
वैसे तो हम बुद्धिमान है
वैसे तो हम सही है
वैसे तो हम ख्यालेदार है
वैसे तो हमसे भगवान निकट है
वैसे तो हम सलाहकार है
वैसे तो हम आज्ञाकारी है
वैसे तो हम योग्य है
वैसे तो हम ज्ञानी है
वैसे तो हम विश्वासु है
वैसे तो हम साथी है
वैसे तो हम दयालु है
वैसे तो हम प्रमाणिक है
वैसे तो हम उपयोगी है
वैसे तो हम श्रद्धालु है
वैसे तो हम सुखी है
वैसे तो हम तटस्थ है
वैसे तो हम न्यायी है
वैसे तो हम दानी है
वैसे तो हम निष्पक्ष है
वैसे तो हम निष्कपट है
वैसे तो हम स्वभिमानी है
वैसे तो हम मददगार है
वैसे तो हम वफादार है
वैसे तो हम निस्वार्थी है
वैसे तो हम साक्षी है
वैसे तो हम निष्पापी है
वैसे तो हम निराग्रही है
वैसे तो हम स्वमानी है
वैसे तो हम निर्दोष है
वैसे तो हम स्वयंभू है
वैसे तो हम सेवक है
वैसे तो हम परोपकारी है
वैसे तो हम कर्मयोगी है
वैसे तो हम सत्यवादी है
पर
🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मत्वा कर्माणि सिद्धते "
अदभुत! अदभुत! अदभुत!
मन - मानव - मनुष्य
यही कर्म से
देव - मानव - दानव
हर कोई मन से ही स्व को देव - स्व को मानव और स्व को दानव सिद्धते है।
मत्वा कर्माणि सिद्धते
हर कोई जीव स्व को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व मन को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व जीवन को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व ज्ञान को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व भाव को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व कर्म को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व पुरुषार्थ को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व अहंकार को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व संस्कार को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व चारित्र्य को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व विचार को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व संकल्प को सिद्धते है
जब से हम स्व कर्म को समझने लगे बस यही क्षण से एक उर्जा - एक शक्ति हममें जागृत हुई - जो धीरे धीरे प्रचंड ज्वाला हो जाती है।
आज हम कहीं भी जीये, कहीं भी मिले, कहीं भी निहाले, कहीं भी विस्तरे हर तरफ हर कोई अपने को सिद्ध करता रहता है - चाहे कोई भी क्षेत्र हो।
मत्वा कर्माणि सिद्धते 🌷🙏🌷
यह हमारा मूल है
यह हमारा ब्रह्म है
यह हमारा धर्म है
बस इनमें ही जुडना जुडाना, चलना चलाना, निभना निभाना, मानना मनाना, सीखना सीखाना, योगना योगाना, स्वीकारना स्वीकाराना, शास्त्र शास्त्राना, अपनाना अपवाना।
चारों ओर
हर व्यवहार
हर विस्तार
हर विचार
" मत्वा कर्माणि सिद्धते "
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे राधा प्रिये!

धानी चुनरी पहनाऊँ

मेधधनुष मांग पुराऊँ

झुल्फें फूलों बंधाऊँ

नैन काजल रंगाऊँ

कर्ण कुंडल जडाऊँ

नथ नासिका नथाऊँ

कंठ वैज्यंती गुथाऊँ

हस्त चुडियाँ खनखनाऊँ

बाजुएं बाजुबंध गंठाऊँ

कमरबंध कमर लचकाऊँ

चरण पैजनिया सोहाऊँ

प्रीत रस प्रियतम पीलाऊँ

आनंद स्पंदन अंग बरसाऊँ

अधर चुंबन मधुराऊँ

सांस उच्छवास महकाऊँ

स्पर्श अगन तडपाऊँ

प्रेम ज्योत प्रकटाऊँ

आत्म परम आत्म ऐकैयाऊँ

नित नित अमृत निहारुँ

हे राधा! मैं तुम्हारे ही दासा

विरह प्रेमाश्रु चरण पखालुँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

कैसा है यह काल है
सारा संसार बेहाल है
कोई न कोई भाल पूछे
जनाब! हाल क्या है?
सांस भरना हाल नही
हर तरह प्राणवायु सवाल है
घर घर काम काज बवाल है
न खाना न दवा हर कोई कंगाल है
हर तरह की धमाल है
कौन अपना पराया निहाल है
कॉने कॉने कॉरोना भूचाल है
गरीब तवंगर मलाल है
जगह जगह यम जलाल है
न तवंगर का मवाल है
पैसा पहचान की कमाल है
चिकित्सक मालामाल है
कोई नही बिना घायल
कौन न खुद को संभाल
कब कौन छोड चले मंजिल
बिनती है हे जगत के लाले
तु है दीन दु:खी के रखवाले
दया याचे प्रभु दीनदयाले
करदे कोई चमत्कार गोपाले
बस! तेरे ही सहारे है संवारले
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ऐसा तो मुझमें क्या है जो मुझे कॉरोना डसा
क्या क्या ऐसा किया मैंने जो यह काल में फसा
न साथी कोई न ज्ञाति कोई बस अकेला झझुमता
न चिकित्सक कोई न औषध प्राणवायु व्यवस्था
अकेले आया अकेले भूगतना अकेले चल बसना
घर में रहूं न भोजन नास्ता न चाय पानी
बाहर भटकूं न पानीपुरी न वडापाव बिरयानी
कैसी हालत कैसी मिलावट घट घट करें जानी
टिफिन मंगाये पाउंच बंधाये आरोगे झंख भानी
यह सोचू वह सोचू यह करलूं वह करलूं सांस घवायो
जीवन की गहरी समय धारा असमंजस में लपटायो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न गभराओ हे हिन्दुस्थानी

यह कॉरोना यह अस्पतालों यह चिकित्सको यह नेताओं

जो भी खेल खेलते है हर एक का फल मिलता है

नेता सेवक - चिकित्सक सेवक - परिचारिको सेवक

सेवक सेवा जन सेवा प्रभु सेवा

जो ज्ञान भूले जो भान भूले जो स्व जीवन भूले

सच कहे

हमारी प्रमाणिकता का कर्म

हमारे विश्वास का धर्म

हमारी संस्कारो का पुरुषार्थ

न कोई लूट सकेंगे न कोई पा सकेंगे

हर व्यवस्था में साथ दे

हर व्यवहार में साथ निभाये

हर नियमों में आज्ञा जुडाये

न कोई समझो हमें हमारा कर्मो का फल मिलता है

यह तो एक ऐसा मौका है

जो जगत नियंता ने हर एक को दिया है

जाग जाओ - संभल जाओ

ब्रह्मांड सृष्टि के सिद्धांतों का पालन करो

नही तो न कोई रहा है न कोई रहेगा

चाहे जगत के अधिक धनवान हो

आत्मा की उर्जा का ऐसा काल चक्र चलता है

जो समय समय में हर एक को संकेत करता है

अन्जानो को जान जान कर न सताओ

सूर्य हर रोज किसीका उगता है

एक सूर्य ऐसे अन्जानो के लिए उग गया

खुद ही ऐसे तडपोगे खुद ही ऐसे तरसोगे

हम तो हर हिसाब चुकाते है

भाई भाई की भावना जगाओ

सेवक सेवा का दीपक प्रकटाओ

यही समय है

मानव मानवता पहचानने का

मानव मानव साथ निभाने का

प्रेम का सत्य पाने का

सही अमीरी लुटाने का

आओ मिलके हम एक वचन करे

हम एक है - एक रहना है - साथ साथ निभाना है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कोई भूल हो तो माफ करना

आत्मीय संवेदना है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम धर्म धरणी
हम कर्म करणी
हम स्व मार्गी
हम पर उपकारी
हम कृतज्ञा मयी
हम करुणा करी
हम इमान दारी
हम विद्या दानी
हम निष्ठा थानी
हम सेवा धारी
हम शिष्ठा चारी
हम है हिन्दुस्थानी
यह वायरस आया
हमें क्यूँ डरना
यह रोग आया
हमें क्यूँ व्याकुलना
यह मान्यता आई
हमें क्यूँ स्वीकारना
यह धृष्टता छाई
हमें क्यूँ अपनाना
हमारी धरोहर - हमारी संस्कृति - हमारे संस्कार
हमारा आध्यात्म - हमारा योग - हमारी वैदिकता
ही ऐसा सार्थक है
यह कॉरोना तो क्या कोई भी धर्म धारणा ऐसे दूराचार को - ऐसी महामारी को क्षण भर में नष्ट कर सकते है।
हम ऐसे तपस्वी है
हम ऐसे भक्त है
हम ऐसे सशक्त है
हम ऐसे वीर्यवान है
हम ऐसे वैदिक है
हम ऐसे सेवक है
जाग जाओ - जग जगाओ
अपना मूल टटोलो
अपना सत्य स्वीकारो
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज के युग का बलिदान 🌷🙏🌷

नागपुर से ८५ वर्षीय श्री नारायण डाभडकर दादा जिसने आज एक ऐसी मिशाल कायम की है - जिससे चिकित्सक, नेता और परिचारिको के लिए ' सेवक " और सेवा क्या है? उसका अदभुत सिमा चिन्ह है।

उन्हें कॉविड हुआ था - उनकी पुत्री उन्हें इन्दिरा गांधी होस्पिटल ले कर आई थी - उनका ऑक्सीजन लेवल बहोत ही कम था। ऐडमिशन के लिए जो रजिस्ट्रेशन कराना था, वह पुत्री डॉक्टर को बुलाने गई। तब एक स्त्री बहोत रो रही थी - उनका पति की को कॉविड हुआ था और उनकी उम्र ४० साल की थी।

जैसे डॉक्टर आये नारायण दादाने वह डॉक्टर को उनकी जगह वह ४० वर्षीय व्यक्ति को दाखल करवाया और ट्रिटमेंट करवायी और वह घर पहुंचे - तीन दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई।

सच! कितना श्रेष्ठ बलिदान 🌷🙏🌷

आज हर चिकित्सक और नेता को समझना है - सच्चा सेवक कौन?

आज हर व्यक्ति को विनंती करते है - अपने बेटे बेटी जो चिकित्सक हो - नेता हो तो ऐसी सेवकता करे - करवाये और समाज के लिए मिशाल हो। 🌷🙏🌷

अवश्य आशा करते है - हम हमारी आत्मा को जगाएंगे 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौनसी भाषा समज सके हम?

कौन कौनसी भाषा हम जताये जायेंगे!

सच! युगों से जीते है, युगों से स्व भाषा जगाते है - समझाते है - अपनाते है - खो देते है - तिरस्कृत करते है - छोड देते है।

और हमने जो जगायी वह नयी भाषा, स्वतंत्र भाषा, स्वछंद भाषा, स्व भाषा जो खुद ही जगाये - खुद ही तिरस्कृते - खुद ही पछताये। न संस्कार, न विश्वास, न स्वमान, न प्रमाण, न सत्य, न पवित्रता, न व्याकरण, न संस्करण इसमें। स्वार्थ, असमंजस, अयोग्यता, असभ्यता, अविद्यता, अराजकता, अल्पता, अभद्रता, ऋक्षता, भ्रष्टता, भ्रमता इनमें - कौन कौन समझे - स्वीकारे - अपनाये?

हर एक की हर एक भाषा

हर एक की हर एक मान्यता

हर एक का हर एक अर्थ

हर एक का हर एक सत्य

हर एक का हर एक अनुभव

हर एक की हर एक सभ्यता

हर एक की हर एक द्रष्टि

हर एक की हर एक कक्षा

हर एक की हर एक शिक्षा

हर एक की हर एक जिज्ञासा

ओहहह! हर एक की............

कौन कौन किसे पहचाने

जो हर एक से बहे वो गंगा, यमुना, सरस्वती

हे वल्लभ! आप अपनी भाषा में पुष्ट

हम हमारी सामायिक कालीय भाषा में मस्त

हर कोई गाये - हम तो जाते अपने गांव

सबको राम राम राम राम

हर एक को श्याम श्याम श्याम!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मेरे दोस्तों!

हमने कितनी तकलीफें झेली

हमने कितनी मुसिबतें सही

हमने कितनी मुश्किलें ढहाई

हमने कितने दर्द डूबोयें

हमने कितने तूफान झझूमे

हमने कितने दुःख सहे

सदा अडग रहे साथ साथ

हम निडर रहे बार बार

हम डटे रहे धार धार

समझ सकते है इसमें जिस पर विश्वास है वोही खेलता है

समझ सकते है इसमें जिस पर श्रद्धा है वोही लूट रहे है

पर एक रहस्य हम भूल गए

पर एक सत्य हम छूट गए

पर एक सिद्धांत हम तोड गए

यह रहस्य है

अपना स्व आत्मा का जो परमात्मा ने अपना अंश प्रमाणित किया है

तो हम यह विश्वास क्यूँ भूल गये?

यह सत्य है

हमारी आध्यात्मिक संस्कृति है जो केवल सत्य को ही पहचानता है और अपनाता है

तो हम यह सत्य कैसे छोड दिये की हमारी नैया तो हमारे कर्म और पुरुषार्थ आधारित है, हम कर्म और पुरुषार्थ ही ऐसा करे की न कोई हमें हताश करें?

यह सिद्धांत है

हमारी धर्म धरोहर सिद्धांतों से अनुभूत है की हम जो भी है वह हमारी तन मात्राओं और पुरुषार्थ आधारित है, जो भी किया वह निश्चिंत उसकी योग्यता हम अवश्य पायेंगे ही, तो हमारा जीवन ही सिद्धांतों से साक्षात किया है की हम सलामत ही रहे।

हे मित्रों! उठो - जागो और अभयता से मुकाबला करे और अन्यायी को ऐसा पाठ पढाये जो सदा साथ साथ - सदा योग्यता पूर्वक अपना जीवन सफल बनाये 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मानव

मनुष्य

Man

मन

जिसके पास मन है वह निरंतर है

जिसके पास मन है वह नित्य है

जिसके पास मन है वह चलता ही रहता है

जिसके पास मन है वह दौडता ही रहता है

जैसे सूरज

जैसे धरती

जैसे आकाश

जैसे वायु

जैसे सागर

हममें कितनी विराटता है

हम कोई भी क्षण अग्नि प्रकट कर सकते है

हम कोई भी क्षण प्रकृति उत्स कर सकते है

हम कोई भी क्षण सर्वस्व में अनंत कर सकते है

हम कोई भी क्षण स्व रुप वहन कर सकते है

हम कोई भी क्षण आद्रता जगा कर बिखर सकते है

यही मानव - मनुष्य - Man - मन करता है, अर्थात कितनी व्यापकता और विराटता हममें है।

हर एक को अवश्य अनुभव हुआ ही होगा जब कितनी भी विपरीत परिस्थिति उठती है तब कोई न कोई आधार अपने पास आ कर हमें पवित्र आधार हिम्मत देती है।

क्यूँ?

क्यूंकि हम अवश्य आत्मीय मन अंश है जो हर विपरीतता को सरलता और योग्यता में परिवर्तन कर सकते है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" परीक्षित "

यह शब्द - यह नाम - यह कर्मयोगी से हर कोई परिचित है।

परीक्षित - गहराई से सोचे

परीक्षित - गहराई से अर्थ करे

परीक्षित - गहराई से व्याकरार्थ करे

अदभुत शब्द है

अदभुत नाम है

अदभुत कर्मयोगी है

हमारे मूल आचार्य श्री वेद व्यासजी ने बिलकुल योग्यता पूर्वक यह शब्द - नाम और कर्मयोगी का उपयोग किया है।

प्राथमिकता से दिशा सूचक कर परमात्मा से एकात्मक तक यह गूढार्थ का उपयोग किया है।

गहराई से अध्ययन करने से

गहराई से चिंतन करने से

हर वैदिकता से शास्त्रार्थ करने से

आत्मीय यज्ञ पुरुषार्थ करने से

यह शब्द - यह नाम - यह कर्मयोगी हमारा प्रतीक तो नही!

यह नाम - यह कर्मयोगी हमारा स्वरुप तो नही!

जो जीवात्मा सर्वथा परीक्षा ही देता रहे!

जो जीवात्मा सर्वथा परीक्षा में ही जीवन जीये!

जो जीवात्मा सर्वथा परीक्षा से ही सर्वत्र का उद्धार करे

हम गहराई से सोचे तो ऐसी अनुभूति होती है - यह हमारे जीवन जीने का मूल स्त्रोत्र है।

अति अनोखा और आवश्यक चरित्र 🌷🙏🌷

हम ही यह चरित्र के गुण अपनाये तो सदा सलामत रह सकते है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मधुर मधुर सी बहती हवा

मधुर मधुर सा स्पर्श करती

अंग अंग को छूती

मन को मधुर तन को मधुर

सांसों को मधुर आत्म को मधुर

विचार को मधुर द्रष्टि को मधुर

अक्षर को मधुर शब्दों को मधुर

ऐसे उडते है ऐसे बिखरते है

गूंज सुनकर आकाश रंग रंगाये

रंग बिरंगे पंखी मधुर गीत गाये

झुलती पत्त वेली फूल उडाये

मधुर मधुर महक महकाये

कितनी मधुर सुबह!

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

मन सोचे कान्हा को पुकारूं

तन सोचे कान्हा को निहारुँ

सांस सोचे कान्हा को न्योछावरु

आत्म सोचे कान्हा को लिपटाऊँ

द्रष्टि सोचे कान्हा को दर्शनाऊँ

अक्षर सोचे कान्हा को सजाऊँ

अंग सोचे कान्हा के शरणाऊँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सहमी सहमी शाम

धरती से अगन अगन वायु उभारे

आकाश से अगन अगन बरसाये

पंखीओ की टोलियां तरस टटोले

मेरी अखियां जलन जलन मिचोले

सांस बास्प बास्प दाह स्पर्शाये

आत्म ज्योत सुलग सुलग प्यासे

कब प्रेम तरंग तान बंसी की छूटे

कब गौधूली मेरी अखिंयन में दिशे

थकी यह सांसे थंभी यह पलके

कब मेरा आत्म तरंग प्रीत धून सुने

कब मेरे नैन कदम रज डगरी निहाले

हे प्रिये! ढलता सूरज करे इशारे

मैं डूबा चक्कर चक्कर काटके

तुम भी डूबो प्रेम विरह रस बहाके

हे सूरज! तुम ढलते रहो डूबते रहो

न मैं ढलुंगी न मैं डूबूंगी

सारी सारी निशा जाग कर

प्रीत की हर दिशा जगा कर

मैं पुकारुंगी प्रिय प्रियतम

अवश्य पाऊँगी यही शाम ढलन पर

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

मैं यह सोच कर जगत दर से जन्म धरा था
कि परमात्मा तक पहुंच कर एकात्म होगा

धर्म का लहराता अपनाया था आँचल
की सिद्धांतों पर चलके साथ निभायेंगे मेरा

कदम ऐसे अंदाज से उठा रहा था
की सदाचार राह पर चलाऐंगी मुझको

मगर समाज ने टोका
मान्यता ने घुमाया
धर्म छुडवाया
सिद्धांतों भूलाया
संसार भटकाया
न मुझको सुधारा
न आवाज ही दी
न वापस जगाया

मैं आहिस्ता आहिस्ता डूबता ही गया
यहां तक के उससे जुदा हो गया मैं
यहां तक के उससे बिछड गया मैं
बिखर गया मैं
भटक गया मैं
डूब गया मैं
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
यह रचना "हकीकत" सिनेमा की प्रेरणा से है
मैंने जो तबदीले किए है वह समाज की मान्यता आधारित है
जो "कराऔके" दरिए यह रचना गा सकते है
अगर कोई अक्षर या शब्द में राग और संगीत आधारित बदलाव कर यह संवेदना व्यक्त कर सकते है
मैं अवश्य आशा रखता हूँ की आप अपने आत्मीय स्वर से अचूक मुझे सुनायेंगे 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷

श्री प्रभु सबको संमति देना

जो अपनी तंदुरुस्ती बना रखे

न घर में परेशान हो

न बाहर हैरान हो

खुद जागे खुदाई जगाये

हर हर में जागे भलाई

न मैं किसीको कष्टाऊँ

न कोई मुझे दुभाये

सबका आशरा तुम ही हो

तो काहे ओर कोई डूबोयें 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हम सदा क्या सोचते है भगवान पाना है 🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

श्रेष्ठ!

हम बार बार दर्शन करते है

हय बार बार कीर्तन करते है

हम बार बार सेवा करते है

हम बार बार सत्संग करते है

हम बार बार उनकी धून में रहते है

हम बार बार उनके धर्म शास्त्रार्थी है

हम बार बार उन्हीं के ख्याल में रहते है

हम बार बार उनके ही गुणगान गाते है

हम बार बार सदा येनकेन प्रकार उनके रहने और होने की क्रीया में डूबोयें रहते है

हमारी द्रष्टि तो उनके ही रस में

हमारी सृष्टि तो उनके ही संग में

हमारी प्रकृति तो उनके रंग में

हमारी कृति तो उनकी सेवा में

सच! जहां जहां वह तीत तीत मैं

सच! कितने भाग्यवान

सच! कितने ज्ञानवान

सच! कितने निष्ठावान

सच! कितने सेवाभावी

सच! कितने सर्वोच्च

सच! कितने सर्वोत्तम

अदभुत! 🌷🙏🌷🌷🙏🌷

जहां जहां हो वहां वहां हम जैसे

अपने आपके साथ आप सभीको प्रणाम करता हूं 🌷🙏🌷

ऐसे ही डूबोयें संसार

ऐसे ही खोयें जीवन

ऐसे ही श्रद्धे जन्म

ऐसे ही कर्मे शिक्षण

अपने आपके साथ आप सभीको वंदन करता हूं 🌷🙏🌷

आज्ञा चाहूँ यही समाज से

मुझे क्षमा करो ऐसे हे परम श्रेष्ठी प्रभु वत्सल 🌷🙏🌷

मुझे अपना संसार जीने दो

मुझे अपना जीवन सिंचने दो

मुझे अपना विश्वास उत्साने दो

मुझे अपना धर्म धरने दो

मुझे अपना कर्म करने दो

मुझे अपना ऋण निभाने दो

मुझे अपना पुरुषार्थ जगाने दो

मेरी विनंती हे जगत नियंता🌷🙏🌷

मुझे आप ही सभी सृष्टि से जगने दो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हसना हसाना😄

प्यार बाटना😄

नाच नचाना😄

झूम झूमाना😄

रंग रंगाना😄

महक महकाना😄

साथ निभाना😄

हाथ देना😄

कदम चलना😄

गाये तराना😄

है हमारा काम😄

हर कोई खुश😄

हर कोई सुख😄

हर हर दीवाना😄

तरह तरह मुस्कुराना😄

उमंग उम्मीद लहराना😄

न कुछ मेरा😄

न कुछ तेरा😄

हर एक का जमाना😄

तु भी जी ले हर खुशी से😄

मैं भी जी लु हर खुशी से😄

तो😄

हे तु हस दे😄

तो😄

हे मैं हस दु😄😄😄😄😄😄 🌷🌷🌷🌷🌷🌷

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏👍👍👍👍👍👍👍👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खुशी बरसे🌷
सुख बरसे🌷
आनंद बरसे🌷
मस्ती बरसे🌷
नखरे बरसे🌷
सौगात बरसे🌷
मनगमत बरसे🌷
संगीत बरसे🌷
शीतलता बरसे🌷
सुगंध बरसे🌷
रंग बरसे🌷
तरंग बरसे🌷
वात्सल्य बरसे🌷
स्नेह बरसे🌷
व्रजरज बरसे🌷
महकता बरसे🌷
मचलता बरसे🌷
तरलता बरसे🌷
मादकता बरसे🌷
मधुरता बरसे🌷
वैविध्यता बरसे🌷
प्रेम बरसे🌷
नैनरंगत दरसे🌷
तनस्पंदन स्पर्शे🌷
धडकने दिल थडके🌷
दैवीय आशीर्वाद बरसे🌷
सच! यही बरस - दरस - स्पर्श - धडक
हम हो ऐसे काबिल💐
हम हो ऐसे भाग्यवान💐
हम हो ऐसे कर्मिष्ठ💐
हम हो ऐसे पुरुषार्थी💐
हम हो ऐसे प्रियतम💐
हम हो ऐसे दर्पण💐
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
हे प्रारंभ करें
हे हर कोई को जीते🌺
हे हर कोई को सुखोये🌺
हे हर कोई को आनंदे🌺
😄😄😄😄😄😄😄😄😄😄😄
👍👍👍👍👍👍👍👍👍👍👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहह कितना अनोखा समय है

जो न किसीका फोन न किसीका संदेश

कुछ हर कोई के लिए कुछ खुद के लिए करने का समय पाया

हिसाब लगाया अबतक के जीवन काल का

अच्छा पढा अच्छी कक्षा पायी अच्छा कमाया धर्म जगाया

गाडी लाया मकान बनवाया इज्जत पायी सामाजिक स्थान पाया

वाह! वाह! वाह!

अब स्व को पढे स्व को कक्षे स्व को कमाये स्व को जगाये

ओहह! कितना अनुभव! खुद का अनुभव कुटुंब का अनुभव

आसपास का अनुभव समाज का अनुभव मित्रो का अनुभव

चित्रकार बनना था गायक बनना था संगीतकार बनना था

क्रिकेटर बनना था साहसवीर बनना था कलाकार बनना था

यही समय है - यही समय है ऐसा कुछ करने का - यही समय है

आंतर उर्जा जगाने का आंतर महेच्छा पूर्ण करने का

किताब पढे नये उजास की

शास्त्र अध्ययने धर्म चारित्र्य की

संस्कृति चिंतने स्व निर्माण की

संस्कार सिंचे वैज्ञानिक सिद्धांत की

वाह! वाह! वाह!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण "

कृष्ण की तस्वीर हर कोई ने दर्शन किये है

कृष्ण के विग्रह हर कोई ने निहाले है

कृष्ण की मूर्ति को हर कोई ने स्पर्श किये है

कृष्ण के चित्रजी को हर कोई ने नमन किये है

पढे हो अनपढ हो हर कोई ने कृष्ण को प्रणाम किया है

किसीने किसी रुप में कृष्ण से नैन छूआये है

ऐसे दर्शन - ऐसे निहालना - ऐसे स्पर्शना - ऐसे नमन करना - ऐसे प्रणाम करना - ऐसे नैन छूआना अर्थात अवश्य कोई अनुभव भी हुए ही होंगे।

यही अनुभूति जब अपने स्वजन, जब अपने निकटतम, जब अपने साथी, जब अपने मित्र, जब अपने आसपास रहते पडोसि, प्राणी, पौधे, नदी, पक्षी को देखकर होता ही होगा।

अगर नही हुआ होता है तो अब देखना हमें उनमें कृष्ण की झांकी अवश्य होगी ही।

ऐसा क्यूँ होता है और होगा?

हम पहले कोई भी अनुभव अपने मन से स्वीकार ले।

शेष कल

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण "

कृष्ण को हमने मन में धरा

कृष्ण को हमने तन में धरा

कृष्ण को हमने धन में धरा

कृष्ण को हमने नैन में धरा

कृष्ण को हमने धर्म में धरा

कृष्ण को हमने कर्म में धरा

कृष्ण को हमने जीवन में धरा

कृष्ण को हमने आचरण में धरा

कृष्ण को हमने आँचल में धरा

कृष्ण को हमने अन्न में धरा

कृष्ण को हमने जल में धरा

कृष्ण को हमने रंग में धरा

कृष्ण को हमने अर्पण में धरा

कृष्ण को हमने तर्पण में धरा

कृष्ण को हमने समर्पण में धरा

कृष्ण को हमने श्रृंगार में धरा

कृष्ण को हमने सेवा में धरा

कृष्ण को हमने शिक्षा में धरा

कृष्ण को हमने विद्या में धरा

कृष्ण को हमने प्रकृति में धरा

कृष्ण को हमने सृष्टि में धरा

कृष्ण को हमने वृत्ति में धरा

कृष्ण को हमने कृति में धरा

कृष्ण को हमने व्यवहार में धरा

कृष्ण को हमने त्योहार में धरा

कृष्ण को हमने संकल्प में धरा

कृष्ण को हमने आचार में धरा

कृष्ण को हमने विचार में धरा

कृष्ण को हमने उत्स में धरा

कृष्ण को हमने जन्म में धरा

कृष्ण को हमने मृत्यु में धरा

कृष्ण को हमने सांसों में धरा

कृष्ण को हमने धडकन में धरा

कृष्ण को हमने अक्षर में धरा

कृष्ण को हमने स्वर में धरा

कृष्ण को हमने मिलन में धरा

कृष्ण को हमने विरह में धरा

कृष्ण को हमने भक्ति में धरा

कृष्ण को हमने शक्ति में धरा

कृष्ण को हमने ज्ञान में धरा

कृष्ण को हमने शास्त्रों में धरा

कृष्ण को हमने आनंद में धरा

कृष्ण को हमने परमानंद में धरा

कृष्ण को हमने प्रेम में धरा

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्य प्राकट्य

मुझे क्या कह रहा है?

मुझे क्या जगा रहा है?

मुझे क्यूँ?

यही जिज्ञासाओं से कल उगते सूरज के साथ हममें बसे श्री आचार्य वल्लभ को यह उपर लिखे प्रश्नो पूछना।

यही जिज्ञासाओं से कल उगते सूरज के साथ हमारे पुष्टि कुल आचार्य से पूछना।

जो उत्तर पाये

यही उत्तर का विश्लेषण हमें अवश्य श्री वल्लभ की ओर ले जायेगा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ!

आपका प्राकट्य हमें नूतन पुष्टि चेतना प्रदान करे

आपका प्राकट्य हमें तनु नवत्व प्रदान करे

आपका प्राकट्य हमें नूतन ब्रह्म संबंध से जोडे

आपका प्राकट्य हमें पुष्टि मोक्ष प्रवर्त करे

आपके प्राकट्य हमें गोपीमन्त्राभिमन्त्रित करे

आपका प्राकट्य हमें सर्व सिद्धांत बोधक सिंचित करे

आपका प्राकट्य हमें सकल गात्रों का समन्वय करे

आपका प्राकट्य हमारी अहंताममतानाशे सर्वथा निरहंकृते करे

आपका प्राकट्य हमें सिद्धे योगे कृतार्थ करे

आपका प्राकट्य हमें तदीयत्वे तदाश्रय: नियतार्थ प्रदान करे

आपका प्राकट्य हमें कृष्ण सेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता करे

आपको दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

आपका स्वागत है यह मनुष्य अंश रुपी जगत में - आप सदा हमारा कल्याण करे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अवतारितभक्तांश: कीलकं परिकीर्तितम् "

" बिजं भक्तप्रिय: शक्ति: सत्यवागुच्यते हरि: "

" भक्तोद्धारप्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मय "

" भक्तस्मयप्रणेता च भक्तवाक्परिपालक "

" कलिनिग्रहकर्ता च धर्मादीनां च पोषक: "

" सर्वध्येयो योगगम्यो भक्त्या ग्राह्य: सुरप्रिय: "

" जन्मादिदसार्थककृतिर्लीलाकर्ता पति: सताम् "

" अनेककल्पकर्ता च सर्वदोषविवर्जित: "

" तीर्थशुद्धैकनिलय: स्वमार्गपरिपोषक: "

" तीर्थकीर्तिर्भक्तगम्यो भक्तानुशयकार्यकृत् "

" भक्ततुल्य: सर्वतुल्य: स्वेच्छासर्वप्रवर्तक: "

हे वल्लभ! आपके प्राकट्य से हर भक्त - हर सेवक, हर जन प्रफुल्लित - आनंदित और पुष्टिमय हो रहे है 🙏

पधारो श्री वल्लभ हमारे हृदयद्वार 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण""जय श्री वल्लभ"🌷🙏🌷

" भक्तोद्धरणयत्नस्तु "

भक्तोद्धरण यत्नस्तु

भक्त उद्धारण यत्न स्तु

हे वल्लभ! आप कितने कर्मनिष्ठ हो की जो जीव साधारण हो, उन्हें आपकी शिक्षा और विद्या सिंचित हो, जिससे वह मानव से मनुष्य - मनुष्य से व्यक्ति - व्यक्ति से भक्त - भक्त से वैष्णव - वैष्णव से भगवदीय - भगवदीय से भागवत।

आपका हर यत्न मनुष्य सुधारक

आपका हर प्रयत्न भक्त उद्धारक

आपका हर ज्ञान पुष्टि प्रवर्तक

आपकी हर रचना वैष्णव प्रदायक

आपका हर सिद्धांत भगवदीय परिपालक

आपका हर कार्य भागवत गुणसृष्टिप्रवर्तक

आप कितने कृपालु और पुरुषार्थेषु हो की हर घडी भक्तिवर्धनम्।

दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहोहो! कितने जीव! कैसा कैसा जीवन!

कोई भी लोक हो

जीवन मधुर करना होता है

जीवन आनंदमय करना होता है

हम शायद चार पेढीयां तक को निहाल सकते है, जान सकते है, समझ सकते है, बाकी सब मान्यता, धारणा और स्वीकारना।

जो चार पेढीयां तक जानते समझते - जितनी सदीयां बिती, यही समय और काल में कितनी झंझावातें, कितना श्रम, कितना झझुमना, कितना बेबाकना, कितने मजबूर, कितने सहमें, कितने भिक्षुक, कितने गरीब, कितने खुशामत, कितने अन्यायी, कितने असहिष्णु, कितने असहाय, कितने जलील, कितने लाचार, कितने गुमसुम, कितने चुमाये, कितने घृणित।

इमान के लिए

स्वमान के लिए

खुद्दारी के लिए

भविष्य के लिए

वंशजों के लिए

रक्षा के लिए

अपनो के सुख के लिए

अपनो के भविष्य के लिए

आज हम जो है उन्हीं के वारसाई से

आज हम जो है उन्हीं के पुरुषार्थ से

आज हम जो है उन्हीं के आशाओं से

आज हम जो है उन्हीं के सपनों से

आज हम जो है उन्हीं के विश्वास से

आज हम जो है उन्हीं के द्रूड विश्वास से

आज हम जो है उन्हीं की आकांक्षा से

आज हम जो है उन्हीं के दीर्घदृष्टि से

हा! हम कितने भाग्यशाली है

गहरी सच्ची और चिंतनीय विचारधारा है।🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पुष्टिमय सेवा का तात्पर्य केवल " वात्सल्य " है

" Mother's Day "

कोई बात नही की एक दिन मनाया

पर

हम तो हररोज जीते है

हे मैया! मुझे केवल तेरा ही सहारा है 🌷🙏🌷

यही हमारा संस्कार है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अपने से अपनो का बिछडना

हर एक को दु:ख होता है

यह न बिछडना और न दु:खी होना

के लिए हमनें कही बार बांधछोड किया

यह बांधछोड नही करने के लिए

हमें अपनी आत्मीय उर्जा प्रजवल्लित करनी होगी

यही उर्जा से हम हर कोई दुरस्ती का नाश कर सकते है

शिस्त में रहना

सही नियमों में बंधना

जो शपथ लिए हर शपथ को निभाना

नियम घडे वह नियम का पालन करना

जो वचन जागृतता से किये है उन्हें संपूर्णता से पूरा करना

विश्वास में जीना

पवित्रता महकाना

शुद्ध व्यवहार करना

महेनत से काम करेंगे

तो अवश्य हम न रोगी भोगी और वियोगी बनेंगे

हमारे संस्कार हम अवश्य निभाये

जो न निभाये वोही मरता है मार खाता है

ऐसा अवश्य होगा ही जो हम स्व को योग्य बनाये

सब सब में शब का रुपांतर न हो

यही तो हमारी मनुष्यता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कभी जो कह न पाये बात

होठों पर अब आयी "

हम तो चल दिये साथी

करेगा कौन जगाई

" कॉरोना "

कब कौन उठे - कब कौन बैठे

हर तरफ है ऐसी दुहाई

समझना है हे साथी!

न करे बुराई न करे ठगाई

न करे जूठाई न करे बेवफाई

यहां ऐसा न्याय है

जो सूक्ष्मता से भी धूर्तता करे

न उन्हें कोई ठहराई न उन्हें कोई रखाई

यही न्याय है यह धरती का

यही कर्मफल है यह जगत का

यही निर्णय है यह धर्म का

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वक्त कहा रुकता है

हम तुम्हें कैसे रुकवाये

है जीवन की धारा ऐसी

जो न किसीको ठहराये

साथ कदम निभाते चले

प्रेम सागर में बहते चले

तो तुम धरती मैं आसमां

तुम उर्जा तो मैं सूरज

तो तुम ज्योत तो मैं पतंग

तुम फूल तो मैं भंवरा

तो तुम नदी मैं सागर

तुम हवा तो मैं पर्वत

प्रेम प्रीत की यही रीत

तुम आत्मा मैं आत्मा

एक होते है परमात्मा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रार्थना

याचना

विनंती

गुहार

आर्त

दुहाई

जुहार

करते रहे करते ही रहे

चाहे हम रहे या न रहे

चाहे हम मिटे या न मिटे

पर न तुझे छोडेंगे न तुझ हमसे छुडायेंगे

हम तुटे तो तुटे हम तडपे तो तडपे

पर न तुझसे बिछडेंगे न तुझसे बिखरेंगे

हम है तुझसे तु भी हमसे ही है

कॉरोना आये या कोई वायरस आये

लडेंगे डटेंगे ऐसे दुश्मन से

नाथेंगे कालीय नाग जैसे

मारेंगे हरायेंगे झुकायेंगे मिटायेंगे

हे प्रभु!

जता तेरी लीला

जगा तेरी अग्नेयता

बता तेरी नियंता

हे काल का महाकाल

हे राक्षस का संहारक

हे तारणहार! तु ही एक जगत उद्धार

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न तुम हारे न हम हारे
कोई कैसे हार सकता है?
कोई कैसे हरा सकता है?
हर कोई अपनी ओर से विद्वान
हर कोई अपनी ओर से ज्ञानी
हर कोई अपनी ओर से बुद्धिमान
हर कोई अपनी ओर से तर्कशास्त्री
हर कोई अपनी ओर से शक्तिशाली
मैं कैसे हार सकता हूं!
नही हरा सकते.है कोई भी तरह।
सच! हारा
स्व हारा
अवश्य हारा
अचूक हारा
हर तरह हारा
हर रीत से हारा
हाँ! मुझे समझना है
न तुम हारे न हम हारे
तो ही दुनिया जीत सकता हूं
तो ही मान्यता हरा सकता हूं
तो ही ऋढिचुस्तता जीत सकता हूं
तो ही अहंकार तोड सकता हूं
न तुम हारे न हम हारे 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ! हमने आपको आचार्य रुप में स्वीकार किया है।

आप चाहे आज एक आत्मीय रुप में हमारी साथ हो

आप चाहे आज हमारी साथ छबिजी या मूर्त रुप में हमारी समक्ष हो

आप चाहे आज हमारी समक्ष शास्त्र प्रमाणित हो।

हम आपका ध्यान धरे

हम आपकी सेवा अर्चन करे

हम आपका अध्ययन करे

हम आपको स्मरण करे

हम आपको हमारी अंदर जीवंत करे

हम मार्गदर्शन पाये

हम प्रेरणा पाये

हम सुख अनुभवे

हम सैद्धांतिक जीवन अपनाये

हम हमारी स्व की जागृतता जगाये

हम सांसारिकता परिवर्ते

हम हमारी आध्यात्मिकता प्रवर्ते

हमारा जन्म जीवन सफल करे

हम स्वदेह मधुदेश सानिध्ये

आप कितने मधुर है

आप कितने करुणानिधि है

आप कितने उद्धारक है

आप कितने पुष्टिपति है

आप कितने परमपुरुषार्थी है

आप कितने गुणसृष्टिप्रवर्तक है

हे वल्लभ! आप हमारा स्वीकार करके हमें भी आपके साथ सदा रहे - चाहे आप तृतीय लोक हो - मधुलोक हो।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धरती को माता समझते है
नदी को धात्री समझते है
पर्वत को रक्षक समझते
प्रकृति को औषधि समझते है
आकाश को आँचल समझते है
वायु को प्राण समझते है
सूरज को देवता समझते है
सागर को पिता समझते है
सृष्टि को जीवन समझते है
तो हम कितने शक्तिशाली है
तो हम कितने सुरक्षित है
तो हम कितने अभय है
तो हम कितने सुखी है
तो हम कितने निरोगी है
तो हम कितने अजोड है
तो हम कितने पुरुषार्थी है
तो हम कितने सैद्धांतिक है
तो हम कितने समयसूचक है
तो हम कितने नियमित है
तो हम कितने धर्मी है
अगर हमने कोई एक को अपवित्र किया
अगर हमने कोई एक को अशुद्ध किया
अगर हमने कोई एक को गंदा किया
अगर हमने कोई एक को अभद्र किया
अगर हमने कोई एक को घिनौना किया
तो हम अवश्य दुष्ट रहेंगे
तो हम अवश्य धूर्त रहेंगे
तो हम अवश्य दु:खी रहेंगे
तो हम अवश्य भोगी रहेंगे
तो हम अवश्य रोगी रहेंगे
तो हम अवश्य अज्ञानी रहेंगे
तो हम अवश्य अधर्मी रहेंगे
तो हम अवश्य लाचार रहेंगे
तो हम अवश्य परतंत्र रहेंगे
सोच कर नक्की करले हमें क्या होना है?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न देखना सामने वाला कुछ नही करते है हमारी मुसीबत में

यही देखना सामने वाला कोई मुसीबत में है दौड के जाना बिना समय घंवाये

न देखना पडोसि कुछ नही करते हमारी आफतों में

यही देखना पडोसि हो कोई आफत में त्वरित जाना बिना बहसे

न देखना सगा सबंधी मदद नही करते हमारी तकलीफों में

यही देखना सगा सबंधी है कोई तकलीफ में समय पर पहुंचना बिना संकोचे

न देखना कोई नही ठहरता है आकस्मिकता में

यही देखना हम ही है सेवक यह आकस्मिकता के सहारा

न देखना जात पात दु:ख के पहाड में

यही देखना हम ही नदी है सांत्वना की जो पहाड को रिश्ता कर दे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनों के द्रष्टांत ले
कितनों के मसवहरा ले
कितनों की सलाह ले
कितनों से अपनी कहें
कितनों की अपनी सुने
कितनी बार सुना अनसुना करे
हाँ! कितना विश्वास औरों पर
जो कहे वह करे
कोई अपना कहे तो?
सच! कैसा है जगत
सच! कैसा है जमाना
न करे तो मुसिबत
करे तो मुसिबत
सुने तो मुसिबत
कहे तो मुसिबत
न बोले तो मुसिबत
मुसिबत मुसिबत मुसिबत
ओहह! कितना विश्वास
अपनो पर अविश्वास
स्व पर अविश्वास
ओ हमने कैसे लगाई इती देर
हम क्यूँ करते है इती देर
ओह! हमसे क्यूँ हो गई इती देर
तो भी मैं होशियार
तो भी मैं ही होशियार
तो भी हर कोई में मैं होशियार
क्यूँ टलवले?
क्यूँ अटकले?
क्यूँ थरथरे?
क्यूँ अधूरे?
है कुछ जीवन में ऐसा
है कुछ संस्कार में ऐसा
है कुछ आचार में ऐसा
है कुछ आकार में ऐसा
है कुछ विचार में ऐसा
है कुछ व्यवहार में ऐसा
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया
नन्हा नन्हा छोटा छोटा माता पितांबर पहनाये
केडे केडियु सर पर मुकुट पहनाये
हाथ में गजरा झुल्फों में मयूरपंख सोहावे
अधर पर बंसरी पांवों में पायल सजावे
मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया

बारह बरस नटखट किशोर गली में धूम मचावे
छोटे बडे का वात्सल्य लुट गौचारण लीला जगावे
बंसरी की मधुर तान छेडत हर कोई नाचत गावत
घर घर आनंद लुटावत जन जन कान्हा कान्हा पुकारत
मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया

छोरा छोरी मंडली गठन ज्ञान भक्ति धजा लहरावत
होलि खेलत फाग उडावत प्रेम रंग अंग अंग भीजावत
आनंद उत्सव दीप प्रज्वलत गोवर्धन लीला सजावत
रास रचावत प्रेम जगावत जीव जीव गोपि भाव जगावत
मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया
मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज तो उगता है हर दम

मिटाता है कल के हर कदम

नया रुप नया सपना नया जोम

कितना अजोड सिद्धांत

कुछ भी किया कुछ भी रख्खा

वो कल हो गया भूत हो गया

नया दिन नये किरण नये रंग

ये किया था ये करना था से

ये करना है ये होना है

कल की बात वोही जाने

जो आज से बिछडना है

जो खुद को खुद से मरना है

जिंदा वोही है जो आज है

पाता वोही है जो आज है

ढल गया आज पूर्ण हो गया

नया सवेरा नया रंग उमंग

नये विचार नइ उर्जा नये संकेत

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ऐसा हुआ
वैसा हुआ
ऐसे देखना
वैसे देखना
ऐसे संभलना
वैसे संभलना
यहां ऐसा
वहा वैसा
वह ऐसा
वह वैसा
तु तेरा देख
मैं मेरा देखूं
उनका उन्हें देखने दो
मुझे मेरा देखने दो
उनका कर्म का फल
मेरा कर्म का फल
ऐसा ही होगा
वैसा ही होगा
ओहहह! कैसे कैसे उच्चारण भरे सूर
हम ऐसे वातावरण के व्यक्ति है?
हम ऐसे विचारसरणी के व्यक्ति है?
हम ऐसे ख्यालों वाले व्यक्ति है?
हम ऐसे संस्कार सिंचे व्यक्ति है?
हम ऐसे कार्य करने वाले व्यक्ति है?
हम ऐसे बोलने वाले के साथी है?
हम ऐसे सुनने के आदी है?
हम ऐसे समझने वाले व्यक्ति है?
नही नही नही नही
तो ऐसे वाक्यों का शोर क्यूँ?
तो ऐसे वाक्यों का कोलाहल क्यूँ?
तो ऐसे वाक्यों का उत्पात क्यूँ?
हमारे हर अज्ञान को मारना है!
हमारी हर मुसिबतों को हराना है!
हमारी हर तकलीफों को मिटाना है!
हमारी हर उलझनों को सुलझाना है!
तो ऐकता
तो ऐकांत
तो धैर्यता
तो निडरता
तो वीरता
तो अडगता
तो श्रेष्ठता
तो निपुणता

तो पवित्रता
तो द्रूडता
तो सज्जनता
तो सत्यता
तो कृतज्ञता
तो विद्वता
तो धर्मता
तो राष्ट्रता
तो विशालता
तो विराटता
तो अभयता
तो नैतिकता
न दुश्मन होगा
न द्वैष होगा
न रोग होगा
न भोग होगा
न क्रूरता होगी
न घृणा होगी
समझलो 🙏
अपनालो 🙏
स्वीकारलो🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने जीया की

मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने दीया की

मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने पिया की

मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने किया की

संस्कार समझ्यो न कुछ

कैसे समझू अपने धर्म की प्रार्थना

संस्कृति समझ्यो नाही

कैसे अपनाये आत्म की याचना

प्रेम प्रीत समझ्यो नाही

कैसे लुटाये दिल की विरहना

जीवन सिद्धांत समझ्या नाही

कैसे आनंद पाये कर्म साधना

समझ्यो केवल एक ही भाषा

मैं ही मैं ही हूं मैं ही मैं ही हूं

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

हे प्रभु! हमें ऐकता दे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सर्वसिद्धांतवागात्मा भक्तिवाक्परिपालक

भक्तकार्यकनिरतो भक्तिरत्नप्रदायक

हमारी संस्कृति ऐसे सिद्धांतों से घडाई है - ऐसे अनुभवो से रचाई है - ऐसे प्रज्ञान से अनुभवाई है - जो अपनाये वह पूर्णता पाये।

हम कहीं प्रकारके विचार विमर्शों में अपने आपको भरे - धकेले - डूबे रहते है - रखते है। इसलिए हम अपने आप को यह दिशा और पथ पर कदम नही उठा सकते है।

दूसरा जो यह जागृतता का माध्यम और मार्गदर्शक न ऐसे माता पिता - न शिक्षक आचार्य या ब्राह्मण या कुलगुरु है। जो सही संस्कार और शिक्षा जगाये।

धन - कैसे भी प्रकार का धन - कैसी भी रीत का धन - किसीका भी धन - कोई भी आचार प्रदान का धन सम्मलित करो। यही ही हमारी यथार्थता और सार्थकता है।

नहीं🙏

जो भक्तकार्यकनिरतो वो सदा भक्तिवाक्परिपालक हो

जिससे वह

सर्वसिद्धांतवागात्मा हो वो भक्तिरत्नप्रदायक हो।

यही तो हमारी मनुष्य जीवन की योग्यता है।

इससे ही हम पूर्णता पा सकते है।🙏

बाकी तो भटकना, अटकना, लटकना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

जीवन की कितनी घडी?
जीवन के कितने पल?
जीवन के कितने घंटे?
जीवन के कितने दिन?
जीवन के कितने सप्ताह?
जीवन के कितने पखवाडिक?
जीवन के कितने मांह?
जीवन के कितने त्रिमांह?
जीवन के कितने छमांह?
जीवन के कितने वर्ष?
जीवन के कितने दशक?
जीवन की कितनी सदी?
सोच लो कितनी घडी?
सोच लो कितनी सदी?
तफावत है कितनी? और कितने?
हम कितने कितने करते है
जो भी करेंगे कितने
हम कभी भी कितनी नही करेंगे
जो कितनी किया वोही जीवन जीत गया
कितनी सूक्ष्म है
कितनी यथार्थी है
कितना शक्तिशाली है
कितनी बलवान है
कितनी श्रेष्ठ है
कितनी को अपनाया संसार जीत लिया
कितनी से जो पाया वह धर्म को धरा
कितनी श्रुति - कितनी ऋचा
कितनी साक्षरता कितनी वैविध्यता
कितनी नम्रता कितनी करुणा
कितनी योग्यता कितनी विराटता
कितनी पुरुषार्थता कितनी सुसंगतता
कितनी सम्मलित करती है
जो सम्मलित है वह विजयी है।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चतुर्थप्रिया "

पुष्टिमार्ग के संस्थापक श्री वल्लभाचार्यजी ने यह उपाधि - यह हृदयता - यह सर्वोच्चता श्री यमुनाजी को प्रदान की है।

क्यूँ और कैसे?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौन कैसा?
कौन कैसे सोचे?
कौन कैसे स्वीकारे?
कौन कैसे कहे?
कौन कैसे सुने?
कौन कैसे देखे?
कौन कैसे अपनाये?
कौन कैसे माने?
कौन कैसे समझे?
कौन कैसे समझाये?
कौन कैसे दे?
कौन कैसे ले?
कौन कैसे रहे?
कौन कैसे जताये?
कौन कैसे बताये?
कौन कैसे लुभाये?
कौन कैसे लुटे?
कौन कैसे ज्ञाने?
कौन कैसे जाने?
कौन कैसे जीये?
कौन कैसे तुटे?
कौन कैस जुडे?
कौन कैसे खोये?
कौन कैसे डूबे?
कौन कैसे भूले?
सच! हम स्व चिंतन करे
यही स्व चिंतन से जो जागा और अपनाया
न रोग
न भोग
न शोक
न वियोग
न दुःख
न भूख
न भय
न जोग
कितने जन्म गये?
हम कैसे?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नरसिंह - नृसिंह "

नर + सिंह

नर अर्थात पुरुष

सिंह अर्थात श्रेष्ठ + उत्तम

जो नर में श्रेष्ठ - नरश्रेष्ठ

जो नर में उत्तम - नरोत्तम

काल - अनेकों प्रकार के काल नर नारी पर मंडला रहता है और नष्ट करता रहता है। यही अनेक प्रकार के कालों को केवल सिंह ही मार सकता है - यही सिंहता का रुप अपनी अंदर भक्त प्रहलाद की भक्ति जैसी आरुढ करवानी है और धर्म की धैर्यता प्रकटानी है तब ही हममें नरसिंह स्वरूप का प्राकट्य होगा और हर दुश्मन, दुष्ट का नाश होगा।

हर हर में नृसिंह प्रकटे हर हर स्वस्थ और आनंदित रहे यही श्री नरसिंहजी को प्रार्थना 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यमिति मे मतिः "

अदभुत! श्री वल्लभाचार्यजी अदभुत!

आपने भव भव के रोग की औषधि बतादी 🙏

आपने जन्म जन्म के फेरे की दुविधा मिटादी🙏

आपने गौलोक धाम के मार्ग की दिशा दोरदी🙏

आपने मनुष्य जीवन के पुरुषार्थ की दिक्षा देदी🙏

हे आचार्य! मेरा साष्टांग दंडवत प्रणाम🙏

स्मरणं भजनं चापि - नित नित अर्थात अतूट - अचल - अजपाजाप भजनं स्मरणं चापि - हम पहचान जायेंगे हम कौन है?

हमारी क्षणभंगुरता ही हमें हराती है - मारती है - लटकाती है - लुटकाती है।

न त्याज्यमिति मे मति - हमने हमारी मति त्याज्य दी

हमने हमारी मति त्याग दी

हमने हमारी मति छोड दी

तो हम कौन?

नही पता

यही तो अपना जन्म का मूल है - जो हमें अवश्य पहचानना है।

हे वल्लभ! हमें सदा जागृत करना हमारी मति को योग्य दिशा मिले🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

माता पिता ही थे संस्कार सिंचने

कुटुंब ही था योग्य घडने

गुरुकुल ही था विद्या पाने

खेती ही थी व्यवसाय करने

वनस्पति ही थी अन्न आरोगने

नदी ही थी जल पीने

जंगल ही थे घर बांधने

प्रकृति ही थी आँचल ओढने

सूर्य ही था प्रथम यज्ञ करने

धरती ही थी स्व स्थान चूनने

वायु ही था सांस लेने

आकाश ही था समय समझने

सागर ही था यात्रा करने

ऐसे जीते जीते वैज्ञानिक भये

ऐसे जीते जीते चिकित्सक बने

ऐसे जीते जीते शिक्षक भये

ऐसे जीते जीते संशोधक बने

ऐसे जीते जीते याज्ञिक भये

ऐसे जीते जीते धार्मिक बने

ऐसे जीते जीते नियामक भये

ऐसे जीते जीते न्यायिक बने

ऐसे जीते जीते तपस्वी भये

ऐसे जीते जीते तकनीकी बने

ऐसे जीते जीते शास्त्री भये

ऐसे जीते जीते खगोली बने

ऐसे जीते जीते खेडूत भये

ऐसे जीते जीते नाविक बने

ऐसे जीते जीते व्यापारी भये

ऐसे जीते जीते जातिय भये

आज ऐसे जीते जीते क्या क्या हो गये

युग युग से युगोत्समी हो गये

काल से कालास्मी हो गये

समय समय से सामायिक हो गये

समझ समझ से सामाजिक हो गये

कोई कहे आध्यात्मिक हुए

कोई कहे आधिदैविक हुए

कोई कहे आदिभौतिक हुए

ऐसे कहते कहते हम वादी हो गये

ऐसे कहते कहते हम आबादी हो गये

ऐसे कहते कहते हम गादी हो गये

ऐसे कहते कहते हम बरबादी हो गये

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

हे परमात्मा! जो भये जो बने

तेरे है तेरे ही है तुझसे ही है

अब क्या होंगे जो होंगे पता नही

हाँ! इतना पता है - तु हमारा परमात्मा है

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे श्री वल्लभ प्रभु!

हे श्री यमुना प्रिये!

हे श्री व्रज राज धिराज!

गिरिराज परिक्रमा

सप्तम कुंड परिक्रमा

अष्टम वन परिक्रमा

नवम बैठक परिक्रमा

व्रजरज परिक्रमा

मेरे मन बसाये मेरे मन तरसाये

मेरे मन दौडाये तेरे ही शरण

यमुना निकुंज

यमुना निकुंभ

यमुना लीला स्थली

यमुना गोप स्थली

यमुना गोपि स्थली

यमुना तट तट बंसी वट वट

प्रेम रास खेले तेरे ही शरण

हे प्रिये गोपाल!

हे प्रिये गोविंद!

हे प्रिये गोवर्धन!

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे राधा!

तुझमें जो स्पर्श है जो मैं पहचानता हूं

तुझमें जो असर है जो मैं अनुभवता हूं

तुझमें जो जागता है जो मैं स्पर्शता हूं

तुझमें जो तडपता है जो मैं सुलगता हूं

तुझमें जो दर्द है जो मैं थरथराता हूं

तुझमें जो आग है जो मैं दहकता हूं

तुझमें जो विरह है जो मैं सिसकता हूं

तुझमें जो अश्रु है जो मैं चुभता हूं

रैना रैना सदा जागती नैना

मंद मंद लहराता पवन अंग अंग जलाता है

शीतल प्रकाशती चांदनी सांस सांस अग्नाती है

महक महकती महक याद याद झुरराती है

टिमटिमाते तारें नैनों में तेरी तस्वीर निहारती है

तु कहे - मैं यहा मथुरा की अटारी पर भटकता लडखडाता सिसकता तेरी यादों में खोया - क्या हूं?

💦💦💦💦💦💦💦💦💦💦💦

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

" भैया गोकुल कब चलोगे? "
प्रश्न है - भैया गोकुल कब चलोगे?
कौन प्रश्न करता है - किसे करता है?
प्रश्न वह करता है जिन्हें गोकुल जाना है
उन्हें प्रश्न करता है जिन्हें गोकुल ले जाना है या जाने के लिए संकेत करते है।
प्रश्न करता है - जो तैयारी के साथ खडा है गोकुल जाने की
जिन्हें प्रश्न करता है वह तैयार नही है गोकुल जाने के लिए
अर्थात
एक द्रढता से गोकुल जाने के लिए तैयार है
दूजा जिन्हें तैयार होना है गोकुल जाने
हमारा मन सदा यही परिस्थिति बार बार खडी करता है
जाना है - सोचते है
बस यही हमारी स्वस्थता - अवस्था
और हम पूरा जीवन जी ले पर न गोकुल जायेंगे
बार बार - यूं - ऐसा - हाँ कल - नही ऐसा - तय करते है - चलेंगे
और आखिर
अब पछताने से क्या जब चिडिया चूक गई खेत
ऐसे जीते जीते तो नही जीते है
ऐसे जीते जीते तो मरते रहते है
ऐसे जीते जीते तो डूबते रहते है
और आखिर
रह जाता है केवल
भैया गोकुल कब चलेंगे?
आज का जीना?
आज का जीया?
आज का जीवन?
आज का मन?
आज का अर्थोपार्जन?
आज का व्यवसाय?
आज का व्यापार?
आज का व्यवहार?
गोकुल पहूंचे तो भी मन गोकुल में नही
कब कैसे कितने जन्मों से गोकुल नही पहूंचे?
भटक भटक - लटक लटक
हे गोकुलवासी! ख्याल हमारा रखना 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कॉरोना तु ना जइयो किसीके द्वार
ना जइयो किसीके द्वार ना जइयो किसीके द्वार

अधैर्य मन हम प्राणी धरती के
अनघड अधूरभण ज्ञान विज्ञान के
कैसे जीये एकदूजे तोल ना जइयो किसीके द्वार

मंदिर मस्जिद गुरु द्वारे बंध से
कामकाज रोजगार व्यापार ठप के
कैसेे जीये बिना कारोबार ना जइयो किसीके द्वार

उबाल मसाला गर्म गलोला पी के
जल औषध हाथ मुखडा धोय के
कैसे करे जीवन व्यवहार ना जईयो किसीके द्वार

हे तारणहार प्रभु!
लीला कर कोई ऐसी अपरंपार
तेरे सहारे तेरे आधारे आश लगा के
ऐसी करे गुजार प्रभु! ना पहुंचे कॉरोना किसीके द्वार

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीत गया जीत गया
कॉरोना को जीत गया
बिना पैसा बिना इलाज
बिना मान्यता बिना सलाह
जीत गया जीत गया
कॉरोना को जीत गया
कहींओ को देखा ऐसा किया
कहींओ को सुना ऐसा किया
कहींओ ने बताया ऐसा करो
कहींओ ने जताया ऐसा करो
नही दवा खाई नही औषधि पीया
नही चिकित्सक बताया नही बैध दिखाया
घर में ही रहा घर का ही खाया
गृह में पाया इलाजों का दीया
प्रकृति से हम प्रकृति से सफाया
कोई कहें हम जानते थे
कोई कहें हम करते थे
कोई कहें हम समझे थे
कोई कहें हम संभलें थे
योग किया उकाला पीया
चूर्ण खाया मसाला खाया
मास्क पहना दूरी रख्खी
न बाहर खाया न बाहर का खाया
कडी कडी सलामती धरी
कमरे में बैठा दिन गीन गीन के
डरता रहा हर सांस स्पर्श से
मंत्र जपता अनुष्ठान स्थाप्ता
जाप गुनगुनाता बिनती करता
आज पाया कॉरोना हराना
नही चाहिए कोई सलाहकार
नही चाहिए कोई चिकित्सक
नही चाहिए कोई अंधश्रद्धा
नही चाहिए कोई मान्यता
मुझमें है मैं ही लडूंगा
मुझमें है मैं ही हराऊंगा
सलामत रहे सलामत रखेगा
सोलह संस्कारों से खुद बंधाना
गीता ज्ञान से शक्ति सिंचना
शिस्त सिद्धांतों से खुद संवरना
हर हितैषी सेवा पूजा आदरना
हर धर्म मूल संस्कृति जगाना
रोम रोम पवित्रता लुटाना
बिना स्वार्थ हर पुरुषार्थ निभाना
गृह अग्नि से हर अवैध जलाना

गृह जल से स्व में अमृत धरना
गृह भूमि से अनित्य मारना
गृह वायु से धृष्टता धिक्कारना
गृह आकाश से विश्वास बाटना
गृह बंधारण से धर्म अपनाना
शायद तब भी आये दुष्टता
यही शिष्टाचार से कदम मिलाना
अपना हाथ ही है जगन्नाथ
अपना साथ ही है श्री नाथ
दौड कर आयेंगे हे सत्य नाथ
नाथेंगे कॉरोना के हर क्रूर प्रहार
कहीं जीये कहीं जीते है
जो अपनाये न कष्ट भराये
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खुद को खुदा कर दे तो ये सूरज झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये आसमान झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये धरती झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये सागर झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये चंद्र झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये प्रकृति झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये परमात्मा झुके
एक ही है ऐसा झुकाने वाले
जो है मेरा प्रिये
जो है मेरे प्रियतम
जो है मेरे प्रेमी
जो है मेरे अंतरयामी
जो श्रृंगार सजे वनस्पतियों के
जो खेल खेले रज रज से
जो लीला करे जल धारा से
जो मुहं में रखे गोरस मिसरी
जो अधर धरे संगीत सरगम
जो मस्तिष्क बांधे मयूर पंख
जो अंग अंग धरे प्रेमाग्नि
जो सांस सांस भरे भक्त महक
जो कदम कदम संहारे अधर्मासुर
जो तिरछी नजर इशारे प्रेमामृत
जो टेडे चरण खडे राधिका दूत
वाह मेरे गोविंद
वाह मेरे गिरिधर
वाह मेरे गोपाल
वाह मेरे गौरक्षक
वाह मेरे गौधूले
वाह मेरे गूंजाधर
वाह मेरे गौरस
वाह मेरे गोवर्धन
वाह मेरे गिरिराज
वाह मेरे गीताकार
वाह मेरे गौरीवर
प्रणाम🙏 प्रणाम🙏 प्रणाम🙏 प्रणाम🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आत्मा " हर हर मैं है।
" आत्मा " हर हर के है।
" आत्मा " हर कोई है।
" आत्मा " हर ही है।
कहीं वेद अध्ययन किये
कहीं शास्त्र पढें
कहीं आध्यात्मिक चिंतन धरे
कहीं एकांत तपस्या आदरें
कहीं मंत्र अनुष्ठान आयोजे
कहीं चारित्र्य कथा विवेचने
कहीं स्थली परिक्रमा घूमें
कहीं कुंभ स्नान न्हाये
कहीं पर्वत दर्शन प्रणामे
कहीं धर्म सभा शिबिरे
कहीं कर्मकांड पूजें
कहीं परम चैतन्य आराधे
हर हर आत्मा से ही प्रजवले
यह " आत्मा " जो हर हर जाने
है मुझमें अंश कोई जो मुझे जीआये
है मुझमें ज्योत कोई जो मुझे प्रजवलाये
है मुझमें चिनगारी कोई जो मुझे जगाये
है मुझमें तिनका कोई जो मुझे अग्नाये
जाने अवश्य पर मनाये मन
भूले कभी कभी न भूले मन
मन ही सबकुछ नही आत्मा कुछ
मन ही मान्यता नही आत्मा सबकुछ
मन स्वीकारे तो है आत्मा
मन अहवेले तो पता नही आत्मा
मन है तो ही आत्मा है
मन से ही है आत्मा
यही हमारा अज्ञान
हे आत्मा कैसे हो कल्याण?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चंद्र पहुंचे मंगल पहुंचे
पहुंचे सागर नदी पर्वत
धरती पहुंचे वायु पहुंचे
पहुंचे पशु पंखी वनस्पति
भौतिकता के स्व में पहुंचे
दैविकता के दैवत्व पहुंचे
पहुंचे मन मन की मुमुक्षा
यहां पहुंचे जहां पहुंचे
प्रकृति के डग डग पहुंचे
हे पृथ्वि वीर!
तु ज्ञानी तु वैज्ञानि
तु पुरुषार्थी तु जिज्ञासी
कदम कदम तु विद्यार्थी
जीते चले जीये चले
ब्रह्मांड रचना समझते चले
अभिनंदन 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पहचान है

मेरा बेटा है

मेरी बेटी है

मेरा जमाई है

मेरा भाई है

मेरी बहन है

मेरे जीजाजी है

मेरे बहनोई है

मेरे काका है

मेरी काकी है

मेरे मामा है

मेरी मामी है

मेरे दोस्त है

मेरे सगा वहाले है

मेरे पडोसि है

मेरे निकट के है

हाँ! मेरे रिश्तेदार है

हाँ हाँ! मेरे निकट के है

हाँ हाँ! अवश्य साथ निभायेंगे

कोई नही चिंता करो

हम है न!

कितने व्याक्य!

कितने आश्वासन!

कितना सहारा!

कितनी निकटता!

कितना रिश्ता!

कितना स्नेह!

कितना साथ!

सच! चारों ओर से विश्वासों की झडी

और

हम स्वस्थ

हम खुश

हम आनंदित

हम निश्चिंत

हम अभय

हम सामाजिक

हम सहायक

हम बलवान

हम उर्जावान

हम घनवान

हम सुरक्षित

यही ही हमारी सही पहचान है 🌷🙏🌷

भगावो हर दुश्मन को साथ साथ जुड के

नाथो हर रोग को मानवता जगा के

कौन क्या है?

यही ही मौका है सेवा समझना

सेवा समझते भक्त होना

भक्त हो कर भगवान पाना 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ प्रभु! हे विठ्ठल प्रभु!

आपको दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

सांसों की माला ऐसी रची है

जैसे पौधे पर उगते फूल

कर्मो की कर्मिष्ठा ऐसी घडी है

जैसे पर्वत से बहती धारा

मन की झडीयां ऐसी उदभवी है

जैसे उठती रैत में मृग जल

नैन की द्रष्टि ऐसी तृष्टि है

जैसे क्रियाओं की प्रमाणीता

अधर की मौनता ऐसी बंधी है

जैसे पशुओं की प्रतिबद्धता

कर्णो की सजागता ऐसी गूंजती है

जैसे मंदिर की घंटारवता

तन की स्पंदनता ऐसी भूनी है

जैसे अचरज रोगों की माया

सच! वल्लभ 🙏 सच! विठ्ठल 🙏

तुमने कैसे घटी पुष्टिमार्ग गाथा?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सोचता रहता हूं
सोचता रहता हूं
जन्म अकेला धरना
साथ साथ जीवन जीना
मृत्यु अकेले पाना
साथ साथी का छोडना
न मन साथ
न तन साथ
एक आत्म और पुरुषार्थ का सिद्धांत
साथ साथ और साथ
पता नही कहां जाना
पता नहीं कहां पहुंचना
पर जाना अवश्य
कहीं मान्यता से माने
यह पायेंगे वहां पहुंचेंगे
पर न कोई बता पाया
कहां क्या क्या है
हम चल पडे
हम ठहर पडे
हम हम हम और हम
हाँ! होती है माता मेरी
बस बाकी हर कोई माता आधारित
है ही ऐसा
तो क्यूँ हम भी रख्खे किसीका
यह मेरा यह मेरी
जब जन्मता हूं तो माता मेरी
जब मृत्युता हूं तो मैं अकेला
चला जाता हूं चला जाता हूं चला जाता हूं 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खेल

हम किस किस को खेल कहते है?

हम कुछ सोचते है कुछ करने

हम कुछ आयोजन करते है कुछ करने

हम कुछ बातचीत करते है कुछ करने

हम कुछ कहते है कुछ करने

हम लिखते है कुछ करने

गहराई से समझे तो खेल है

हमने कहीं शास्त्रीओं से सुना खेल खेलने यह जीवन खेला रचा है परम खेलाडी ने

कब कैसे कौनसा खेल खेले कोई नही जानता

बस हम जीते जीते समझते जाते है

परम खेलाडी खेल खेलते खेलते हमें उनके जैसा बनाने की कोशिश करता जाता है

अपने सिद्धांतों और कर्म फल आधारित सबको खेल खिलाता है

जो अपने जैसे होता जाता है उन्हें अपना दास रुप परिवर्तन करते करते अपना रुप में ढालता है

जीवन का रहस्यों से अवगत करता है

अपनी लीला से रसो वैस करता है

यही खेल खेलते रहे खेलाडी हमें अपना बनाते रहे

यही है खेल

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मनुष्य जीव जन्म जीवन पाया है

सटीक सटोसट सार्थक करने

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण की निरस्कृती

जीव होगा जन्म होगा जीवन होगा मनुष्य नही हो सकते तो

जीवन समझे

जन्म समझे

मनुष्य जीव समझे

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण को आत्म स्मृति सिंचते

मनुष्य जीव जागा जन्म जागा जीवन जागा आत्म जागेगा

आत्म जागा

कर्म जागा

पुरुषार्थ जागा

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण को जगाते जगाते

परमार्थ पाया

यथार्थ पाया

कृतार्थ पाया

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण से आनंद को समझा

अखंडानंद को समझा

परमानंद को समझा

स्वराटानंद को समझा

यही ही मनुष्य जीव जन्म जीवन की महत्वता - योग्यता - विशिष्टता

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मेरे परम मित्र!
आपको दंडवत प्रणाम 🙏
आप मेरे परम क्यूँ हो?
हर क्षण आप मेरा कितना ख्याल रखते हो।
हर क्षण आप मुझे कितने दिशा निर्देशक हो।
हर क्षण आप मुझ पर कितने कृपार्थी हो।
हर क्षण आप मुझे कितना सांकेतिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने दार्शनिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सूचनिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने मार्गदर्शिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने हितेषी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने जागतिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने ऋणी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने उतकृष्टि हो।
हर क्षण आप मेरे कितने वशिष्ठ हो।
हर क्षण आप मेरे कितने कृतज्ञि हो।
हर क्षण आप मेरे कितने वैश्विक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने उर्जित हो।
हर क्षण आप मेरे कितने लाक्षणिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सात्विक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने पारदर्शक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सहध्यायी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने साक्षी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने माध्यम हो।
हर क्षण आप मेरे कितने मधुर हो।
हर क्षण आप मेरे कितने विशेष हो।
हर क्षण आप मेरे कितने विश्वनीय हो।
हर क्षण आप मेरे कितने आदरणीय हो।
हर क्षण आप मेरे कितने निश्चित हो।
हर क्षण आप मेरे कितने धार्मिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने क्षमाशील हो।
हर क्षण आप मेरे कितने रक्षक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सकारात्मिक हो।
आपको वंदन🙏
आपको नमन🙏
आपका सेवक🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज रज "

रज पर्वतों की चट्टानों से तुट तुट कर उबड खाबड मार्गो से टकरा कर

नदियों की धारा से पिघलते पिघलते जल बूंदों से टकराते

हवाओं के बवंडर में उडते कहींओ से टकराते

रेत रेत कण कण और अति सूक्ष्म रज में रुपांतर होती है

यह सूक्ष्म रज जब गौ के चरण से टकराते, दबाते गौधूली हो तो

यही सूक्ष्म रज जब गौचारण के वक्त प्रेम वत्सल कन्हैया के चरणों के स्पर्श से प्रेम रज हो तो

यही सूक्ष्म रज जब अनेकों अनेक विरह वेदांता भक्त स्मरणांजल श्रम से भटकते, लडखडाते, तडपते पैरों से कुचलते व्याकुल रज हो तो

यही सूक्ष्म रज बाललीलाओं से खेले गई श्री यमुना निकुंज की मिलन धारा से बहते बहते प्रेमोत्मक उत्कृष्टता के स्पर्श से चिपके धरती, प्रकृति पर स्थिर हो तो

वह स्थली - वह मार्ग, वह धूली, वह कण, वह रज

जो सांस भरते मधुर महक प्रसराय

जो निहालते नैन रोमांच अनुभवे

जो डग भरते आनंद स्पंदन जगाये

जो मन अपने आप स्थिर हो जाय

जो तन अपने आप लिपटाता जाय

जो अंग अपने आप सुलगने लगे

जो आत्म अपने आप हिलोरे झुमने लगे

जो अधर अपने आप प्रियतम पुकारे

जो हर ओर श्याम रंग ही रंग सोहाय

यही "व्रज रज" है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मानस चरित्र" के नियमन - संस्कार - शिष्टाचार - सभ्यता किसने घडा?

कहीं युगो और काल की ओर गहरा ध्यान करेंगे तो पूर्वजों पूर्वजों की ओर केन्द्रित होता है - जिन्होंने जीते जीते अनुभव पाते पाते - व्यवस्था करते करते कहीं नियमन - संस्कार - शिष्टाचार - सभ्यता का गठन और बंधन घडे।

आज हम भी ऐसे ही अविरत घडते जाते है - जीवन जीते जाते है। इसलिए तो विविधता - विभिन्नता - विखवादता - विघटनता - विपरीतता आदि में लपटाते - मान्यता बंधे जीवन जीते जाते है और स्व मूल्यांकन करते जाते है।

यह वडिल इसलिए ऐसा

यह गुरु इसलिए ऐसा

यह विज्ञान इसलिए ऐसा

यह मातापिता इसलिए ऐसा

यह मित्रवर्ग इसलिए ऐसा

यह चारित्र्य इसलिए ऐसा

यह मानसिकता इसलिए ऐसा

यह अनुभव इसलिए ऐसा

यह समाज इसलिए ऐसा

एक उम्र - एक कक्षा हम स्व निर्णायक होते है

बस!

जो स्व को रचा - सोचा - समझा यही हम - यही हमारा जीवन - यही हमारा चरित्र - यही हमारा धर्म - यही ही हमारा नियमन - संस्कार - शिष्टाचार और सभ्यता।

नजर ऐसी

स्वर ऐसे

अन्न ऐसा

व्यवहार ऐसा

समय ऐसा

हमसे ही हमने रचा

वोही इनसे बचा

जो सैद्धांतिक - सत्य आचरण आधारित नियमन - संस्कार - शिष्टाचार - सभ्यता को अपनाये।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बरसती बूंद

स्पर्शते तन

उठता स्पंदन

थनगनता मन

गुनगुनाता अधर

पुकारते सूर

नजरों में प्रितम

नजारों में प्रितम

बहारों में प्रितम

लहरों में प्रितम

घनघोर में प्रितम

गडगडाहट में प्रितम

बिजली में प्रितम

आसमान में प्रितम

मेघो में घनश्याम

श्यामा में श्याम

नैन में घनश्याम

काजल में श्याम

अंग अंग में श्याम

रग रग में श्याम

रंग रंग में श्याम

सांस सांस में श्याम

हे श्याम!

तु ही मेरो घनश्याम

तु ही मेरो प्रियतम

तु ही मेरो प्रेम

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आआआआअअअ
हे राधा
हे गोपि
मुझे मुझे भाये
व्रज परिक्रमा झुमना
झुम के छूए गौचारण गोपाल
गोपाल गोपाल गोपाल
मुझे मुझे भाये
व्रज परिक्रमा झुमना
ओओओओआआआ
हे यमुना
हे सखी
मुझे मुझे धाये
व्रज लीला स्पर्शना
स्पर्श से रज रज मोहना
मोहन मोहन मोहन
मुझे मुझे धाये
व्रज लीला स्पर्शना
आआआआअअअ
ओओओओआआआ
हे राधा
हे गोपि
हे यमुना
हे सखी
मुझे मुझे भाये
मुझे मुझे धाये
वृंदावन परिक्रमा
व्रजरज स्पर्शना
ओओओओओओओ
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" निर्जला एकादशी "

निर्जल - कभी सोचा है - हम निर्जल हो सकते है?

कभी सोचा है - यह निर्जला एकादशी क्यूँ?

प्रथम प्रश्न का उत्तर है - कोई भी जीवन निर्जल नही है। जल से ही जीवन जल ही जीवन।

अखंड ब्रह्मांड जल जल जल - रसो-वै-स

रस - जल से

जीव - जल से

जीवन - जल से

तो यह निर्जला एकादशी हमारी संस्कृति में क्यूँ?

शास्त्रों ने विष्णु भगवान से जोडा

शास्त्रों ने भीम पांडव से जोडा

क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" निर्जल " अर्थात बिना जल

" निर्जल " अर्थात शुद्धता - आंतरिक और बाह्य

" निर्जल " अर्थात बिना जल

हमारी आध्यात्मिक - आदिदैविक - आदिभौतिक बंधारण से समझे तो बिना जल अस्तित्व नही है।

वैज्ञानिक समझ - धर्म सिद्धांत समझ बिना जल हमारी प्रकृति - संस्कृति और कृति नही है।

जल है तो जहां है - जल है तो हर हर है

तो यह जल कैसा होना चाहिए हमारे में और हमारे जीवन में और हमारे कर्तव्य में और हमारे पुरुषार्थ में?

हमारे ऋषिमुनियों ने जो " निर्जला एकादशी " का पर्व संस्थापित किया - वह एक दिन का है, पर वह हर घडी के लिए कहीं योग के द्वार खोल देते है।

हर युग के जीवन को यह " निर्जला एकादशी " अनेकों प्रकार के आध्यात्मिक, आदिदैविक, आदिभौतिक और वैज्ञानिक सिद्धांतों श्रेष्ठता के लिए शिक्षित और प्रमाणित करते जाते है।

यह कोई मान्यता या अंधश्रद्धा का पर्व नही है। यह अपने आपको - अपने जीवनको - अपने कर्मको - अपने धर्मको विशुद्ध और पवित्र करता है।

यह कोई वार्ता या पौराणिक कथा आधारित संस्थापना नही है। यह जगत नियमन - प्रकृति नियमन - सृष्टि नियमन और जीव नियमन सैद्धांतिक विज्ञान है।

जो स्वीकारना ही है - अपनाना ही है।

जिसने स्वीकारा और अपनाया वह निर्मोही - निरोगी - निस्संदेह - निस्पृही - निश्चिंत।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जब फूल कोई खिलता है
प्रितम की महक महकाती है

जब बादल कोई बरसता है
प्रितम की चुभन भिगती है

जब कोयल कूहूक गाती है
प्रितम की धून गूंजती है

जब झरना धारा गिरती है
प्रितम की बूंदें बिखरती है

जब मयूर पंख फैलाता है
प्रितम की कलगी बंधती है

जब सूरज किरणें उगाता है
प्रितम की मेघरंग रंगाता है

जब गीत संगीत गुनगुनाते है
प्रितम की पुकार सुनाती है

जब नील रंग आसमाता है
प्रितम की चुनरी संवरती है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छीन कर नैनों से काजल

मिटा कर तन से आँचल

तोड कर पैरों से पायल

छोड कर धडकन से प्रेमल

हटा कर मांग से गुलाल

बुझा कर जीवन से चौल

लुट कर दिल से दोल

चुरा कर मन से मोल

हे कान्हा! कैसा है यह तेरा तोल?

मैं कैसे रहूं तुम बिन सरल?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसा मन

कैसा तन

कैसा नैन

कैसा जीवन

जन्म से पाया हो

पर

जब दिल रचाया

हे प्रभु! तु हममें बस गया

चाहे हम कितने भी स्वार्थी हो

चाहे हम कितने भी बेवफा हो

चाहे हम कितने भी विश्वासघाती हो

चाहे हम कितने भी संदेही हो

चाहे हम कितने भी संशयी हो

चाहे हम कितने भी अहंकारी हो

चाहे हम कितने भी दुष्टकर्मी हो

चाहे हम कितने भी अधर्मी हो

हम तेरे

केवल तेरे

सिर्फ तेरे

तेरे ही है

क्यूंकि की दिल से

हम तेरी ओर खिंचाते खिंचाते तुझसे जुडते जाते है

इसलिए तो यह मन में करुणा है

इसलिए तो यह तन में सेवा है

इसलिए तो यह नैन में दया है

इसलिए तो यह जिवन में कर्म है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छूपा छूपी
छूपा छूपी
चांद खेले
छूपा छूपी
कभी बादलों के पीछे
कभी घनघोर के पीछे
कभी पर्वतों के पीछे
कभी जंगलों के पीछे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
गोपि खेले
छूपा छूपी
कभी आँचल के पीछे
कभी घूंघट के पीछे
कभी दुपट्टे के पीछे
कभी हथेली के पीछे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
गोप खेले
छूपा छूपी
नैन छूपे छूपे
मुखडा छूपे छूपे
पलकों छूपे छूपे
परदा छूपे छूपे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
प्रितम खेले
छूपा छूपी
इशारे छूपे
अदाऐं छूपे
नखरें छूपे
नजारे छूपे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
प्रिये खेले
छूपा छूपी
🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

" बहार के रास्ते पर वह भटक जाते है

जिसके मन की हर राह अंधेरी होती है "

बस! 🌷🙏🌷

यही है 🌷🙏🌷

कौन किसको क्या कहे? 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न्यारी प्यारी व्रज रज दुलारी
जिसने छूआ हुए प्रेम पुजारी

गोप ने छूआ गोपि ने छूआ
हुए राधा हुए बांकेबिहारी

संत ने छूआ भक्त ने छूआ
हुए हरिवंश हुए प्रेम प्रखारी

मीरा ने छूआ चैतन्य ने छूआ
पायी अखंड प्रेम मिलन समाधि

ऐसी अनोखी ऐसी अनुरागी
जो घट घट प्रेम जगाई

हे मेरी प्रिये राधा! हे मेरे प्रिये कान्हा
तुझ संग मैं रंग रंग लिपटाई

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टि दर्शन १

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara



Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी, संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006, गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com - Mobile - 9327297507